



पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय
क्रमांक. १ नीमच(म.प्र.)



पलाश

विद्यालय पत्रिका २०२३-२४

School Magazine 2023-2024



About Us

PM SHRI Kendriya Vidyalaya Neemuch, is a Senior Secondary School (XI-XII), affiliated to Central Board of Secondary Education (CBSE). The School is a Co-ed School, with classes from I to XII. It is an English Medium school. The school is located in Neemuch, Madhya Pradesh. Kendriya Vidyalaya was established in 1969. It accomodates more than 1900 students of BAIVATIKA to XII.



- LIBRARY
- EXAM ROOM
- CMP ROOM
- PHYSICS LAB
- CHEMISTRY LAB
- BIO LAB
- LANGUAGE LAB
- LRC ROOM
- COMPUTER LABS
- SPORTS ROOM
- ART ROOM
- MUSIC ROOM

CONTACT US!



07423-220233



ppl.neemuchcrpf@kvs.gov.in

Kendriya Vidyalaya CRPF
Campus Neemuch (MP) Pin-
458441

PM SHRI Kendriya Vidyalaya No.1 Neemuch

Staff Members

| SNo | Teachers' Name | Designation | SNo | Teachers' Name | Designation |
|-----|---------------------|----------------|-----|---------------------------|-------------|
| 1 | PRIYDARSHAN GARG | PRINCIPAL | 33 | BIRJESH GAUR | TGT |
| 2 | C PARGI | VICE PRINCIPAL | 34 | ROSHNI | TGT |
| 3 | SUNITA PORWAL | PGT | 35 | BHADU LAL MEENA | TGT |
| 4 | ANIL KUMAR AGARWAL | PGT | 36 | GD BAIRAGI | TGT |
| 5 | HEMILTON MASIH | PGT | 37 | RK VERMA | TGT |
| 6 | HK BHABHIWAL | PGT | 38 | PM SAMBHARIYA | TGT |
| 7 | DINESH SANCHORA | PGT | 39 | PRADEEP YADAV | HEAD MASTER |
| 8 | AABHA PAREEK | PGT | 40 | SAVITA MISHRA | PRT |
| 9 | SANDEEP JAIN | PGT | 41 | SANYOGITA CHUNDAWAT | PRT |
| 10 | PUSHPENDRA KU SUMAN | PGT | 42 | MADHU JAIN | PRT |
| 11 | RAGINI SINGH | PGT | 43 | ANJANA DILRAJ | PRT |
| 12 | KK ARYA | PGT | 44 | VEENA | PRT |
| 13 | ALPANA GUPTA | PGT | 45 | JASMEET KAUR PURI | PRT |
| 14 | RACHANA SALUJA | PGT | 46 | CHANDRA PRAKASH CHANDOLIA | PRT |
| 15 | RAJESH BANSIWAL | PGT | 47 | SEEMA | PRT |
| 16 | MANISHA SINGH | PGT | 48 | ROHITASHAV SAINI | PRT |
| 17 | RK JAIN | TGT | 49 | HARSHIT | PRT |
| 18 | KS YADAV | TGT | 50 | AJAY KUMAR | PRT |
| 19 | LS MEENA | TGT | 51 | SOUMYA | PRT |
| 20 | DK SOLANKI | TGT | 52 | GOKARAN | PRT |
| 22 | KHUSHI CHAUHAN | TGT | 53 | ATUL | PRT |
| 23 | AK RAMAWAT | TGT | 54 | DEEPALI | PRT |
| 24 | P VARIAGI | TGT | 55 | SAKSHI | PRT |
| 25 | MADHURI YADAV | TGT | 56 | SHIVANSHU | PRT |
| 26 | RK GROVER | TGT | 57 | DEEPALI | PRT |
| 27 | BL FAGERIA | TGT | 58 | URAVSI | PRT |
| 28 | BALWANT | TGT | 59 | PURNIMA | PRT |
| 29 | RAHUL SINHA | TGT | 60 | MANSI | PRT |
| 30 | ANIL KUMAR YADAV | TGT | 61 | AYUSHI | PRT |
| 31 | DALEEP SINGH YADAV | TGT | 62 | SONALI | PRT |
| 32 | RAJ RANI | TGT | 63 | SANDEEP SINGH RANA | ASO |
| | | | | | |

PM SHRI Kendriya Vidyalaya No.1 Neemuch

CONTRACTUAL STAFF

| SNo | Teachers' Name | POST |
|-----|----------------------|---------------------|
| 1 | MEGHA GANG | TGT |
| 2 | ANITA SHARMA | TGT |
| 3 | PRATIKSHA SHARMA | COMPUTER INSTRUCTOR |
| 4 | GUNJAN GARG | COMPUTER INSTRUCTOR |
| 5 | SHAIENDRA SINGH GOUR | COUNSELLER |
| 6 | BABURAM | SPORTS COACH |
| 7 | DIPTI SONI | YOGA INSTRUCTOR |
| 9 | KRISHNA PATOONIYA | NURSE |
| 10 | RITU JAIN | PRT |
| 11 | RACHANA AHIR | SPECIAL EDUCATOR |
| 12 | DILIP KUMAR SIKDAR | OFFICE STAFF |
| 13 | NILU PAL | BALVATIKA |



विद्यालय परिवार



Dy Inspector General of Police

ग्रुप केन्द्र, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल

Group Centre, Central Reserve Police Force

नीमच (मध्य प्रदेश)-458441

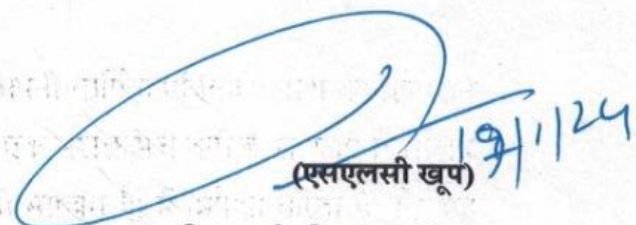
Neemuch (Madhya Pradesh)-458441

प्रिय पाठकगण

यह जानकर अपार हर्ष हुआ है कि केंद्रीय विद्यालय क्रमांक १, नीमच अपनी वार्षिक पत्रिका पलाश का प्रकाशन करने जा रहा है। विद्यालय पत्रिका हमेशा से नवोदित रचनाकारों के लिए एक सशक्त मंच बनी है, साथ ही विद्यालय में साल भर चली गतिविधियों एवं उपलब्धियों को उजागर करने का भी माध्यम है। मैं अपेक्षा करता हूँ कि यह पत्रिका बच्चों के अंदर छिपे अधिक से अधिक रचनात्मक कौशल का विस्तार करेगी। किसी भी पत्रिका में पहली बार नाम छपना एक सुखद अनुभूति होती है, मैं उन सभी विद्यार्थियों को बधाई देता हूँ, जिनकी रचनाएं इस पत्रिका में प्रकाशित होने जा रही हैं।

आशा है कि, यह पत्रिका पाठकों के मानस पटल पर अपनी गहरी छाप छोड़ेगी।

शुभकामनाओं सहित।


(एसएससी खूप) 19/11/24

पुलिस उप महानिरीक्षक सी. आर. पी. एफ. एवं अध्यक्ष वि.प्र.स.के.वि. क्र 1 नीमच

सन्देश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1 नीमच द्वारा विद्यालय के छात्रों के रचनात्मक विकास एवं प्रोत्साहन के लिए विद्यालय ई-पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

छात्रों की मौलिक प्रतिभा को मंच प्रदान करने तथा उनमें सृजनात्मकता को अधिक विकसित करने की दृष्टि से विद्यालय में संचालित गतिविधियों एवं उपलब्धियों का विस्तृत विवरण पत्रिकाएं ही प्रदान करती है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका विद्यार्थियों के सृजनात्मक विकास एवं उनकी भावाभिव्यक्ति को एक नई दिशा देने में अग्रणी होगी।

पत्रिका के प्रकाशन में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करने के लिए मैं प्राचार्य महोदय, स्टाफ एवं छात्रों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

आर सेंथिल कुमार

उपायुक्त

केवि संगठन भोपाल संभाग



सन्देश

मुझे यह जानकर बहुत ही प्रसन्नता हुई कि पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1 नीमच ई पत्रिका 'पलाश' (सत्र 2023- 24) प्रकाशित कर रहा है।

विद्यालय ई पत्रिका विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक है। मेरा ऐसा विश्वास है कि ई पत्रिका विद्यालय गतिविधियों के लिए एक मंच साबित होगी। विद्यालय ई पत्रिका बच्चों की रचनात्मक सोच एवं विचारों को अभिव्यक्त करने का बेहतर माध्यम साबित होगी। साथ ही विद्यार्थियों के लिए यह रोचक एवं ज्ञानवर्धक भी साबित होगी, जिसे पढ़कर बच्चे अच्छी बातों को जीवन का हिस्सा बनाना चाहेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह प्रकाशन निश्चित ही आपके विद्यालय की परिष्कृत संस्कृति के नियमित विकास में योगदान देता रहेगा।

मैं इस अवसर पर विद्यालय के सभी शिक्षकों को एवं छात्रों को हार्दिक बधाई देती हूँ। मुझे विश्वास है कि आगामी वर्षों में विद्यालय अपनी प्रतिबद्धता से ओर भी प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा।

किरन मिश्रा

सहायक आयुक्त

केवि संगठन भोपाल संभाग



प्राचार्य की कलम से...

किसी भी विद्यालय की पत्रिका उस विद्यालय की प्रगति तथा गतिशीलता का दर्पण होती है। इस से विद्यालय की सांस्कृतिक और शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ साहित्यिक रुचि का भी पता चलता है।

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नीमच अपनी ई-पत्रिका पलाश को प्रकशित करने जा रहा है। हमारी ई-पत्रिका इस बात का प्रमाण है कि विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए विद्यालय परिवार प्रतिबद्ध है। हम इस क्षेत्र में निरंतर सकारात्मक प्रयास कर रहे हैं।

विद्यार्थियों को पुस्तकीय ज्ञान के साथ साथ साहित्यिक ज्ञान भी अनिवार्य है। इससे बच्चों में शब्द शक्ति और नव सृजन की कला को बढ़ावा मिलता है तथा विद्यार्थियों की रचनात्मक ऊर्जा का विकास होता है। विद्यालय पत्रिका इस क्षेत्र में सबसे उपयुक्त प्रयास है। अतः विद्यार्थियों ने इस पत्रिका में कविता, कहानी, अनुभव, आलेख, योग, साहित्य, संस्कृति, विज्ञान एवं सामाजिक-आर्थिक विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है और अंतर्निहित रचनात्मकता, मौलिकता, सृजनशीलता को प्रदर्शित किया है।

माननीय उपायुक्त महोदय, सहायक आयुक्त गण, के वि (क्षेत्रीय कार्यालय) भोपाल संभाग तथा अध्यक्ष महोदय, तथा विद्यालय प्रबंध समिति का हार्दिक आभार, जिनके मार्गदर्शन में विद्यालय निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर है।

अंत में सभी विद्यार्थियों शिक्षकों और संपादक मंडल का आभार प्रकट करना चाहूंगा। जिनके परिश्रम और सहयोग से पत्रिका के संपादन का कार्य पूरा हो पाया है।

प्रियदर्शन गर्ग

प्राचार्य

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक १ नीमच



संपादक की कलम से...

किसी भी विद्यालय की पत्रिका उस विद्यालय का आइना होती है। उसी में विद्यालय की सांस्कृतिक और शैक्षणिक गतिविधियों के साथ साथ साहित्यिक रुचि का भी पता चला है। पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक १ नीमच सत्र 2023-24 में अपनी ई पत्रिका पलाश प्रकाशित करने जा रहा है हमारी ई पत्रिका इस बात का प्रमाण है कि यहाँ विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिये विद्यालय परिवार प्रतिबद्ध हैं। हम इस क्षेत्र में निरंतर सकारात्मक एवं रचनात्मक प्रयास कर रहे हैं।



विद्यार्थियों को पुस्तक के ज्ञान के साथ साथ साहित्य ज्ञान भी अनिवार्य है। इससे बच्चों में शब्द शक्ति और नव सृजन की कला को बढ़ावा मिलता है। विद्यार्थियों की रचनात्मक ऊर्जा का विकास होता है। पत्रिका इस क्षेत्र में सबसे उपयुक्त प्रयास है। अतः विद्यार्थियों ने पत्रिका में कविता कहानी आलेख एवं अन्य रचनाओं को अपनी लेखनी से लिखा है और अंतर्निहित रचनात्मक मौलिकता सृजनशीलता को प्रकट किया है।

अंत में सभी विद्यार्थियों शिक्षकों और संपादक मंडल का आभार व्यक्त करना चाहूंगा जिनके अथक परिश्रम और सहयोग से पत्रिका के संपादन का कार्य पूर्ण हो पाया।

हेमिल्टन मसीह

स्नातकोत्तर शिक्षक

हिन्दी



सम्पादक मंडल

श्री हेमिल्टन मसीह (मुख्य सम्पादक)

ENGLISH

Miss Alpana Gupta

Mrs. Madhuri Yadav

Mrs. Megha Gang

हिन्दी

श्री डी के सोलंकी

श्री भादु लाल मीना

संस्कृत

श्री लक्ष्मण सिंह मीना

छात्र संपादक मण्डल

खुशी केवट 12 C

प्रगति शिव 12 B

प्राची गुर्जर 12 A

मानसी तिवारी 12 D



लक्ष्य

ये पथ तुम्हे निहारती
गुण ज्ञान लिए पुकारती
सशस्त्र साध्य साज कर
चले चलो बढे चलो

जीवन यदि संग्राम है
उसका भी एक विहान है
त्रसित हयात छोड़ कर
चले चलो बढे चलो
एक लक्ष्य संधारण करो
संकल्प से संवार कर
मन और, तन को साध कर
चले चलो बढे चलो
विहंग मार्ग आएगा
अंधकार भी छाएगा
प्रकाश की तलाश में
चले चलो बढे चलो
रक्त की नदी भी हो
हमराह यदि, नहीं भी हो

रुको नहीं
थको नहीं
प्रवीण बन
चले चलो
चले चलो
बढे चलो

हर स्वांस
लक्ष्य पर
वार दो

हर खुशी उसे उधार दो
गुण ज्ञान से दुलार कर
शक्तिमान सा
चकित, निडर, चित्तकार कर
प्रवाह सा चले चलो
चले चलो बढे चलो

द्वारा

रागिनी सिंह

स्नातकोत्तर शिक्षक

इतिहास



स्वरचित प्रेरणापूर्ण लघु कथा

अंकुरण

कोविड महामारी का दौर था। विद्यालय में आनलाइन ही पढ़ाई हो रही थी। साल के अंत में, वार्षिक परीक्षा का भी आनलाइन हुआ, आज सभी वार्षिक परीक्षाफल का घोषित हुआ। रमेश उसकी कक्षा में पढ़ने में अब्बल दर्जे का था। वह परीक्षा फल देखकर बहुत निराश हुआ। उससे कमजोर उसके मित्र नकल करके उससे कई गुना अच्छे अब्बल अंक प्राप्त का सामाजिक माध्यमों पर अपना परीक्षा डाल चुके थे।



रमेश को हताशा भाँपते हुए उसके पिता जी ने उसका मन टटोलते हुए कहा - “तुम्हारी कक्षा में तुम्हारा कितना स्थान रहा है”

“कोई खास स्थान नहीं “

“मतलब इस बार कोई रैंक नहीं !”

इतना सुनते हुए, उसकी आँखे भर आई और कहने लगा - “पिता जी, इंटरनेट से नकल करके अच्छे अंक लाए है, ये बच्चे पढ़ने में बहुत कमजोर है, आपने ही मुझे नकल करने नहीं दी, परीक्षा के दौरान आप ही मेरे कमरे में आकर बैठ जाते थे.. कोई बात नहीं .. अगले साल कोरोना महामारी थोड़े ही रहेगी फिर देखना मेरा परीक्षा फल ... ”

पिताजी शांत हो कर बैठे थे, जैसे परीक्षा परिणाम उनको पहले ही पता हो। उनका पुत्र रमेश अभी जरूर परेशान हो रहा था, मगर पिता जी पुत्र रमेश के जीवन में ईमानदारी के बीज का अंकुरण स्पष्ट देख रहे थे। जो पिता को अंदर ही अंदर बहुत प्रसन्न कर रही थी।

-गोपाल दास बैरागी
पुस्तकालय अध्यक्ष

TOPPERS

RESULT CLASS-XII (2022-23)



MILLIND RAJ SINGH
SHAKTAWAT
SCIENCE
94.4%



ADITI JAIN
COMMERCE
94.8%



SADIYA KHAN
HUMANITIES
94.4%

RESULT CLASS-X (2022-23)



ARPIT
98.6%



ANMOL SALUJA
94%



USHASHEE NAYAK
93.4%

SCIENCE STREAM



MILLIND RAJ SINGH
SHAKTAWAT

94.4%



DIVYANSHI CHUNDAWAT

93.6 %



AYUSH MAKWANA

89.4 %

COMMERCE STREAM



ADITI JAIN

94.8%



ADITYA NAMDEV

82.4%



AYUSH SHARMA

79.6%

HUMANITIES STREAM



SADIYA KHAN

94.4%



RIYA CHHATA

89.8 %



ELISHA MASIH

83.6%

1 2 3



हिन्दी अनुभाग

“लड़के भी रोते हैं जब घर से दूर होते हैं”

घर में बच्चे लेकिन बाहर मशहूर होते हैं
अजी लड़के भी रोते हैं जब घर से दूर होते हैं।।

लड़के भी घर से बाहर मम्मी पापा के बगैर होते हैं,
यदि लड़की घर की लक्ष्मी तो लड़के भी कुबेर होते हैं,
बस यादें ही जा पाती हैं अपने गांव जमीनों तक,
लड़के भी कहाँ जा पाते हैं कई साल महीनों तक,

अपनों के सपनों के खातिर ये भी मजबूर होते हैं,
अजी लड़के भी रोते हैं जब घर से दूर होते हैं।।

खड़े हमेशा सोचते हैं घर के बारे में पर खड़े कहीं और होते हैं,
सिर्फ लड़कियाँ ही नहीं लड़के भी दिल से कमजोर होते हैं,
विश्व जीतने का एक सिकंदर इनमें भी होता है,
बस रोते नहीं पर एक समुन्दर इनमें भी होता है,

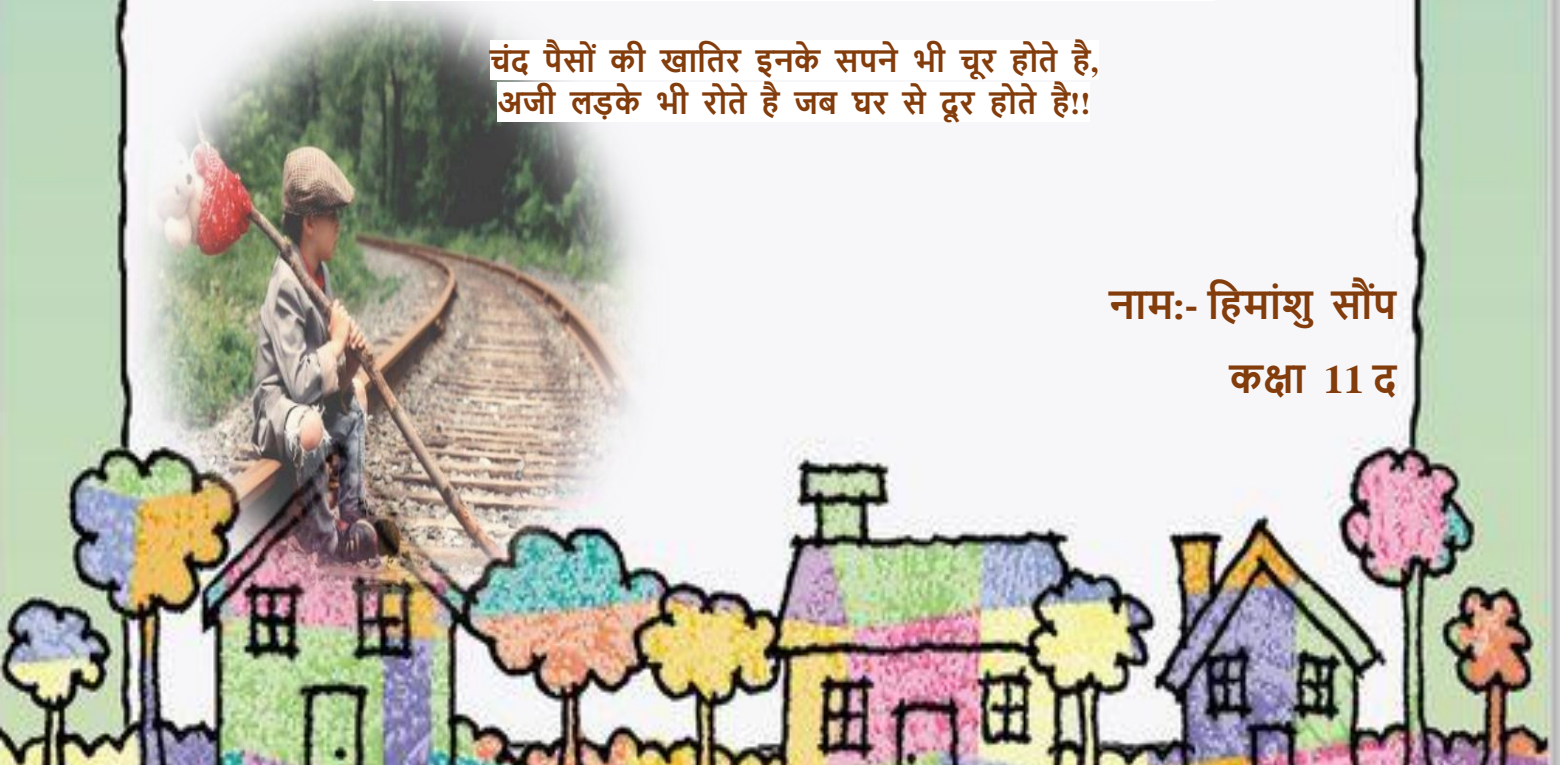
यदि लड़की पापा की परी तो लड़के भी कोहिनूर होते हैं,
लड़के भी रोते हैं जब घर से दूर होते हैं ।।

माना कि लड़कियों को घर छोड़ जाने का एक डर होता है,
लेकिन इनका एक घर के बाद दूसरा घर होता है,
माना कि लड़कों को कोई डर नहीं होता,
ये नौकरी तो करते हैं कई शहरों में पर इनका कोई घर नहीं होता,

चंद पैसों की खातिर इनके सपने भी चूर होते हैं,
अजी लड़के भी रोते हैं जब घर से दूर होते हैं!!

नाम:- हिमांशु सौंप

कक्षा 11 द



अच्छा कहा

- अगर आप किसी से पीछे रह जाओ, तो घबराना मत क्योंकि मकान बनने से ज्यादा समय महल बनने में लगता है।
- मंदिर में भगवान है जिन्हें हमने बनाया है, घर में माँ- बाप वो भगवान है जिन्होंने हमें बनाया है।
- झूठ बिक जाता है, क्योंकि सच को खरीदने की सबकी औकात नहीं होती।
- वक्त और टीचर दोनों सिखाते है फर्क सिर्फ इतना है कि टीचर सिखा के इम्तिहान लेता है और वक्त इम्तिहान लेकर सिखाता है
- खुद की सेल्फी निकालना कुछ सेकंड का काम है, पर खुद की इमेज बनाने में जिंदगी गुज़र जाती है।

नाम- सचिन बारोड़

कक्षा-11 (ब)

बचपन

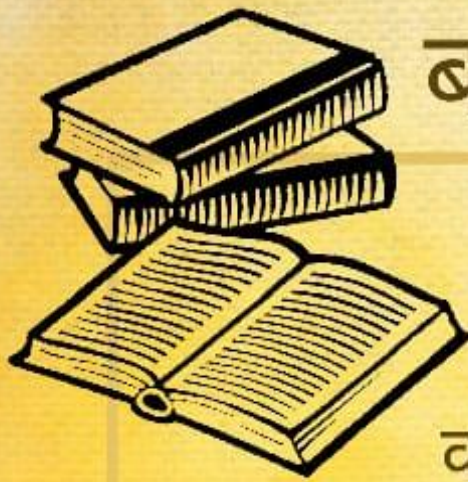
छीनकर खिलौने को, बाँट दिये गमा
बचपन से दूर, बहुत दूर हुए हम ॥
अच्छी तरह से अभी पढ़ना न आया
कपड़ों को अपने बदलना न आया।
लाद दिए बस्ते हैं भारी-भरकम ।
बचपन से दूर बहुत दूर हुए हम ॥
अँग्रेजी शब्दों का पढ़ना-पढ़ाना
घर आके दिया हुआ काम निबटाना
होमवर्क करने में फूल जाये दम
बचपन से दूर बहुत दूर हुए हम ॥
देकर के थपकी न माँ मुझे सुलाती
दादी है अब नहीं कहानियाँ सुनाती
बिलख रही कैद बनी, जीवन सरगम ।
बचपन से दूर बहुत दूर हुए हम ॥

इतने कठिन विषय कि छूटे पसीना
रात-दिन किताबों को घोट-घोट पीना
उस पर भी नम्बर आते हैं बहुत कम।
बचपन से दूर बहुत दूर हुए हम॥



नाम- अज़लीना मंसूरी

कक्षा- ग्यारहवीं आर्ट्स



बढ़ना है तो पढ़ना है

दुनियाँ में बढ़ना है तो,
कठिनाइयों से लडना है,
मुसीबतों के पहाड़ चढ़ना है,
हार कर कुछ नहीं होगा,
एक दिन तो जीतना है,
मोह-मोह में नहीं है सोना,
अभी से चल, वरना
आगे पड़ेगा रोना,
दुनियाँ में बढ़ना है तो,
कठिनाइयों से लडना है,
बढ़ना है तो, पढ़ना है।



पार्थ कुमरावत
कक्षा 8 बी



केन्द्रीय विद्यालय कं. 1, नीमच



समय के साथ परिश्रम का महत्व

एक बार की बात है, एक गाँव में दो मित्र रहते थे, जिनका नाम गोलू और भोलू था। भोलू पढ़ने में बहुत ही अच्छा था, लेकिन गोलू उतना अच्छा नहीं था, जितना की भोलू। एक दिन जब ये दोनों विद्यालय गए तब पता चला कि उनकी वार्षिक परीक्षा की समय-सारणी आ गयी है। तब भोलू बहुत ही खुश हुआ, लेकिन गोलू खुश नहीं हुआ, क्योंकि गोलू पढ़ने में अच्छा नहीं था।

जब गोलू एवं भोलू के शिक्षक को ये बात चला कि वार्षिक परीक्षा की समय-सारणी आने के कारण गोलू परीक्षा से भयभीत है तो उन्हें बहुत बुरा लगा। उन्हें एक उपाय सुझा, तब उन्होंने गोलू एवं भोलू को बुलाया और कहा कि जो वार्षिक परीक्षा में एक-दूसरे से ज्यादा अंक लाएगा, उसे मैं एक तोफा दूँगा। ये बात सुनकर गोलू अपनी वार्षिक परीक्षा की तैयारी दिन - रात पूरी मेहनत एवं लगन के साथ करने लगा, लेकिन भोलू ने नहीं की, क्योंकि वह सोच रहा था कि मेरे तो गोलू से अधिक अंक ही आएंगे तो मुझे मेहनत करने की क्या जरूरत है? जब परीक्षा का परिणाम आया तो गोलू पूरे विद्यालय में प्रथम आया और भोलू के कम अंक आये। तब गोलू के शिक्षक बहुत खुश हुए और उन्होंने गोलू को एक अच्छी सी "घड़ी" भेट स्वरूप दी।

शिक्षा - इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि समय के साथ कड़ी मेहनत और सूझ-बूझ से किये गये परिश्रम से हमे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने से कोई रोक नहीं सकता है।



नाम- रोहन राज

कक्षा- दसवीं (स)

केंद्रीय विद्यालय नं0- 1, नीमच।

कुछ मजेदार पहेलियाँ

1. मेरा नाम एक फूल, और मिठाई दोनों है, बताओ में कौन हूँ?
2. लाल शरीर है कला मुंह, कागज को वह खा जाता है, हर शाम पेट खोलकर कागज को कोई लेजाता है?
3. एक पक्षी के है रंग तीन, जिसे आसमान में उड़ता देख, सबके दिल को मिलता सुकून?
4. बिना पानी के घर वह बनाये, सबके घर में मिल वह जाए?
5. उसके कई है दांत, बिना मुंह के करता वह सुरीली बात?

6. अगर आप अँधेरे कमरे में है एक मोमबत्ती, एक लालटेन और एक दिया के साथ है तो सबसे पहले आप क्या जलाएँगे?

उत्तर - 1.गुलाब जामुन 2.पोस्ट बॉक्स 3.तिरंगा 4. तिरंगा 5. हारमोनियम 6.माचिस



नाम- रौनक राज
कक्षा- पाचवी (अ)

रानी लक्ष्मी बाई मेरे सपने में आई वे चाहती कि कुछ इस प्रकार से देश की सेवा करूँ
थक मत जाना रुक मत जाना । भारत की संतान तुम झुक मत जाना ।"

हरदम उत्साह से जीवन तुम भरते जाना । शौर्य और वीरता को माथा तुम लिखते जाना ॥

मातृभूमि की शान और आन में वीर तुम बढ़ते जाना। अपने झौसले से नित नई कहानी तुम लिखते जाना ॥

चंद्रयान 3 से आदित्य 11 तक हर असंभव को संभव कर दिखलाते जाना । विश्व में अपनी प्रतिभा का परचम तुम फहराते जाना ॥

अपनी काबिलियत पर भरोसा करना, परिस्थितियों से ना तुम घबराना । थक मत जाना, रुक मत जाना,
भारत मां की संतान तुम झुक मत जाना ॥



नाम : अतुल सलूजा
कक्षा पांचवी 'अ'

केन्द्रीय विद्यालय ब्रह्मांक-1 नीमच



योग का शाब्दिक अर्थ होता है जोड़ या मिलाना अतः मन का शरीर के साथ जोड़ या मिलन ही योग है । दूसरे शब्दों में कहे तो मन को एकाग्र करना ही हमारे



योग है । योग हमें ऋषि मुनियों की अद्वितीय देन है बेहतरीन बनाता है

। यह हमारे जीवन को

। आजकल की भाग दौड़ भरी जिंदगी में इसका महत्व और बढ़ जाता है। यह हमारे शरीर को लचीला ही नहीं बनता अपितु



स्पर्ति भी देता है । यह मन को शांत करता है । नित्य योग करने वाला व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रहता है । तनाव कम करने

के लिए योग बेहतर उपाय है । संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि 'योग एक चमत्कार है' ।



मृदुल भील,
सातवीं 'अ'



किशोर कुमार

जन्म: 4 अगस्त, 1929 खण्डवा मध्यप्रदेश निधन: 13 अक्टूबर, 1987

भारतीय सिनेमा के मशहूर पार्श्वगायक समुदाय में से एक रहे हैं। वे एक अच्छे अभिनेता के रूप में भी जाने जाते हैं। हिन्दी फ़िल्म उद्योग में उन्होंने बंगाली, हिन्दी, मराठी, असमी, गुजराती, कन्नड़, भोजपुरी, मलयालम, उड़िया और उर्दू सहित कई भारतीय भाषाओं में गाया था।

उन्होंने सर्वश्रेष्ठ पार्श्वगायक के लिए 8 फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार जीते और उस श्रेणी में सबसे ज्यादा फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार जीतने का रिकॉर्ड बनाया है। उसी साल उन्हें मध्यप्रदेश सरकार द्वारा लता मंगेशकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उस वर्ष के बाद से मध्यप्रदेश सरकार ने “किशोर कुमार पुरस्कार”(एक नया पुरस्कार) हिंदी सिनेमा में योगदान के लिए चालु कर दिया था



विशाखा सांवलिया

11 द

प्राग्ज्ञानंधा: भारत का नवा सितारा

भारत देश ने अपनी क्रीड़ाओं में हमेशा ही अपार पोटेंशियल दिखाया है। चाहे वह क्रिकेट हो या शतरंज, हाथों-हाथ खेली जा रही मेजबानी आपात्तिजनक परिस्थितियों के बावजूद दुनिया का ध्यान देखती है। भारतीय खिलाड़ी प्राग्ज्ञानंधा की युवा उम्र में ही हासिल किया गया सुप्रभात करिधायन पावर से एक अद्वितीय रूप है। प्राग्ज्ञानंधा का जन्मदिन 10 अगस्त, 2005 को आता है।

प्राग्ज्ञानंधा का करिश्मा इसलिए अनूठा है क्योंकि वे सिर्फ 5 साल की उम्र में चेस सीखने के बाद से ही अपनी सामरिक क्षमता में वृद्धि कर रहे हैं। उनके लिए यह तो खेल है, मज़ा है, जिसे वह पूरी ईमानदारी और लगन के साथ खेलते हैं।

प्राग्ज्ञानंधा 2018 में अपने आयुमान्यम होंगे क्रमशः ग्रैंड मास्टर, ग्रैंड चेस मास्टर, इंटरनेशनल मास्टर और जूनियर वर्ल्ड चैंपियन आदि, उनकी शानदार विजयों का अभिनंदन किया जाना चाहिए। इन सभी मान्यताओं को हासिल करने के बाद उन्होंने अपने कुशल खेल के लिए बहुत सारे सम्मान प्राप्त किए हैं।

आज, प्राग्ज्ञानंधा पूरी दुनिया में चर्चा का विषय हैं। उन्होंने कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट में शतरंज का आत्मविश्वास बढ़ाया है और उनके खेल में बहुत तेजी लाई गई है।

प्राग्ज्ञानंधा का सपना है कि वह एक दिन विश्व चैंपियन बनें और अपने देश के लिए गर्व का कारण बनें। वह अपने प्रयासों के माध्यम से दूसरे युवा खिलाड़ियों को प्रेरित करना चाहते हैं और बताना चाहते हैं कि किसी उम्र में सफलता अवश्य मिलती है।

भारतीय खिलाड़ी प्राग्ज्ञानंधा की युवा उम्र में ही दुनिया के सर्वोच्च टूर्नामेंटों में खिलाड़ियों के संग्रह को चुनौती देती हैं। उनके लिए ये सिर्फ शुरुआत है और भविष्य में वे देश का मान बढ़ाते रहेंगे।

प्राग्ज्ञानंधा एक संघर्षशील और प्रगतिशील खिलाड़ी हैं, जो दुनिया को दिखा रहे हैं कि युवाओं की क्षमता को कोई सीमा नहीं होती। हम सभी को उनकी सफलता पर गर्व होता है और हमें आशा है कि उनका नाम दुनिया भर में और ऊंचाइयों में रोशनी डालता रहेगा

गोविंद बंबोरिया

बारहवी ब

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

जन्म – 9 सितम्बर 1850 वाराणसी, उत्तर प्रदेश में हुआ
प्रमुख रचनाएं- भारत दुर्दशा, नीलदेवी, अंधेर नगरी
पेशा- लेखक, देशहितचिंतक पत्रकार
मृत्यु – 6 जनवरी 1885



परिचय

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाते हैं। वे हिन्दी में आधुनिकता के पहले रचनाकार थे। इनका मूल नाम 'हरिश्चन्द्र' था, 'भारतेन्दु' उनकी उपाधि थी।

हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल का प्रारम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है। भारतेन्दु बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। हिन्दी पत्रकारिता, नाटक और काव्य के क्षेत्र में उनका बहुमूल्य योगदान रहा। हिन्दी में नाटकों का प्रारम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है। भारतेन्दु के नाटक लिखने की शुरुआत बंगला के विद्यासुन्दर (1867) नाटक के अनुवाद से होती है।

ब्रिटिश राज की शोषक प्रकृति का चित्रण करने वाले उनके लेखन के लिए उन्हें युग चारण माना जाता है।

भारतेन्दु जी ने मात्र चौंतीस वर्ष की अल्पायु में ही विशाल साहित्य की रचना की। उन्होंने मात्रा और गुणवत्ता की दृष्टि से इतना लिखा और इतनी दिशाओं में काम किया कि उनका समूचा रचनाकर्म पथदर्शक बन गया।

नाम आस्था जैन
कक्षा - 11-d

वीर जवान

मंदिर जाते मस्जिद जाते

गा आरती या अज़ान है

पर कभी शीश झुकाया उनके आगे

वो जो वीर जवान है

रोज पढ़ते खबर अखबारों में

कहते ये अनहोनी तो होनी थी

कितना आसान है ये कहना

की सरहद पर तो गोली चलती ही है।

जा कर महसूस करो वो पल

जब हर गोली से धरती हिलती है

शांति पसंद नहीं किस इंसान को

चाहे नहीं जंग कोई भी जवान

पर जब दुश्मन बुरी नज़र डाले इस धरती
पर

रोक लेता हर गोली अपना सीना तान

एहसान मनो हर उस वीर का

जो दुश्मन से लोहा लेता है

वो हर पल खड़ा है सरहद पर डट कर

वो सच्चा भारत माँ का बेटा है

इसीलिए मैं दोहराती हु

मंदिर जाते मस्जिद जाते

गा आरती या अज़ान है

पर कभी शीश झुकाया उनके आगे

वो जो वीर जवान हैं



नाम: खुशी केवट

कक्षा: XII C

"महाराणा प्रताप"

जिनके चलने के डर से,
मुगलों के दिल घबराते थे!
तलवार की मार ऐसी,
जैसे युद्ध लड़ने महाकाल आ जाते थे!!

ना संधि स्वीकार करी,
ना कभी गुलामी माने थे!
जब भी रण में उतरे,
वे मेवाड़ शेर हमेशा,
जीत कर ही मानते थे!!

बचपन से ही शूरवीर,
ना कभी किसी से घबराते थे!
बजरंग सा ऐसा बोल था उन में,
योद्धा समेत घोड़ा तक,
दो हिस्सों में काट जाते थे!!

जिनकी मौत की खबर सुन,
अकबर भी खूब रोया था!
हरा ना सका ऐसे शेर को,
जिसके डर से कई रातों
तक,
वह चैन से ना सोया था!!



ऐसे थे मेरे मेवाड़ी शेर,
जिनकी सिर्फ तलवार की धार से,
दुश्मनों के दिल तक हिल जाते थे,
वह अजय-अमर वह शूरवीर,
वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप कहलाते थे!

नाम - प्रेक्षा सोलंकी
कक्षा - 8 'द'

हॉकी के जादूगर



मेजर ध्यानचंद ने 1928, 1932 और 1936 में भारत को तीन ओलंपिक स्वर्ण पदक दिलाए. उन्होंने 1936 के बर्लिन ओलंपिक फाइनल में जर्मनी पर भारत की 8-1 की जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी जिसमें वह 3 गोल के साथ टॉप स्कोरर भी बने थे.

हर साल 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल दिवस मनाया जाता है. ये दिन हॉकी के दिग्गज खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद के जन्मदिन के मौके पर उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए मनाया जाता है. हॉकी के जादूगर कहे जाने वाले भारत के महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद सिंह का जन्म 29 अगस्त 1905 को वर्तमान प्रयागराज, यूपी में हुआ था. अपनी बुनियादी शिक्षा प्राप्त करने के बाद, उन्होंने 1922 में एक सैनिक के रूप में भारतीय सेना की सेवा की. वह एक सच्चे खिलाड़ी थे और हॉकी खेलने के लिए सूबेदार मेजर तिवारी से प्रेरित थे. ध्यानचंद ने उन्हीं की देखरेख में हॉकी खेलना शुरू किया.

हॉकी में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के कारण, उन्हें 1927 में 'लांस नायक' के रूप में नियुक्त किया गया और 1932 में नायक और 1936 में सूबेदार के रूप में पदोन्नत किया गया. इसी वर्ष उन्होंने भारतीय हॉकी टीम की कप्तानी की. वह लेफ्टिनेंट, फिर कैप्टन बने और आखिर में मेजर के रूप में पदोन्नत किए गए.

उन्होंने 1928, 1932 और 1936 में भारत को तीन ओलंपिक स्वर्ण पदक दिलाए. उन्होंने 1936 के बर्लिन ओलंपिक फाइनल में जर्मनी पर भारत की 8-1 की जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी जिसमें वह 3 गोल के साथ टॉप स्कोरर भी बने थे. वह 1928 के एम्स्टर्डम ओलंपिक में 14 गोल करने वाले खिलाड़ी भी थे.

नाम - अनुज सती / कक्षा-11द /रोल न .11405

संघर्ष के बाद हमें अपने आप में और अपने इरादे में विश्वास होना चाहिए। संघर्ष हमें ताकत देता है अपने मंज़िल तक पहुंचने के लिए। हम अपने सपनों की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित होते हैं।

संघर्ष के दौरान हम कई बार ठोकर खाते हैं। लेकिन यह ठोकर हमें कमजोर नहीं, बल्कि मजबूत बनाती है। हर गिरने और उठने से हम सीखते हैं

जीवन की यात्रा, एक रंगीली सी बात है,
सपनों की पंक्तियों से भरी, मुस्कानों से रात है।
हर एक पल खास होती, यह सच्चाई है निश्चित,
खुद को पहचानो, और जीने का आनंद लो विश्वस्त।



हर सुबह उठते ही देखो, नई उमंगों की चादर है,
आगे बढ़ो धीरे-धीरे, खुद को सजाओ अदा से बहार है।
लम्हों को अपनाओ, और खुशियों को बांटो सबके साथ,
जीने का यही तरीका है, खुश रहो और खुश रखो आपका मार्ग।

जीवन की यात्रा, रंगीली चिड़िया की तरह है,
खुशियों के पंख फड़काएं, और चिं
संघर्ष के बाद सफलता का फल मीठा होता है। जब हम अपने लक्ष्य के लिए मेहनत और समर्पण से काम करते हैं, तो सफलता हमें जरूर मिलती है। संघर्ष हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसमें हम अपने मनोबल और प्रतिभा को परखने का मौका पाते हैं।

संघर्ष के बाद हमें अपने आप में और अपने इरादे में विश्वास होना चाहिए। संघर्ष हमें ताकत देता है अपने मंज़िल तक पहुंचने के लिए। हम अपने सपनों की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित होते हैं।

संघर्ष के दौरान हम कई बार ठोकर खाते हैं। लेकिन यह ठोकर हमें कमजोर नहीं, बल्कि मजबूत बनाती है। हर गिरने और उठने से हम सीखते हैं
जीवन की यात्रा, एक रंगीली सी बात है,
सपनों की पंक्तियों से भरी, मुस्कानों से रात है।
हर एक पल खास होती, यह सच्चाई है निश्चित,
खुद को पहचानो, और जीने का आनंद लो विश्वस्त।

हर सुबह उठते ही देखो, नई उमंगों की चादर है,

आगे बढ़ो धीरे-धीरे, खुद को सजाओ अदा से बहार है।



Pranay Banodha

11 C

नया सबक



एक जंगल में एक चूहा और गिलहरी रहते थे। चूहे का नाम 'मीकु' और गिलहरी का नाम 'मिंकी' था। मिंकी बहुत महनती थी पर मीकु आलसी था। मिंकी अपने कोटर में अनाज इकठ्ठा कर रही थी क्योंकि बारिश का मौसम आने वाला था।

एक दिन मिंकी ने मीकु से कहा "भैया, बारिश का मौसम आने वाला है, तुम भी भोजन इकठ्ठा कर लो।" मीकु बोला "मैं पागलों कि तरह मेहनत नहीं कर सकता।"

बरसात का मौसम आ गया। एक-दो दिन मूसलाधार बारिश हुई। मीकु के बिल में पानी भर गया। वह जैसे-तैसे पेड़ कि कोटर में गया। कोटर के सामने उसे 'चीकू' खरगोश दिखा। मीकु ने पूछा "क्या तुम्हारे पास खाने के लिए कुछ है?" चीकू बोला "मेरे पास थोडा सा ही खाना है। अगर वह भी मैं तुम्हें दे दूंगा तो मैं क्या खाऊंगा?" ऐसा कहकर चीकू वहां से चला जाता है।

तभी उसे ऊपर में 'टीकू' कौआ दिखा। उसने टीकू से भी पूछा पर उसने भी इनकार कर दिया। वह कोटर में फूट-फूटकर रोने लगा। यह चिंकी से देखा नहीं गया। उसने थोड़े से मूंगफली के दाने मीकु को खिलाये।

मीकु बोला "अबसे मैं मेहनत से मुंह नहीं मोड़ूंगा। मैंने नया सबक सीख लिया है।"

लेखक - वेदांग खण्डेलवाल

कक्षा - छठी 'द'





योग



padamviagraasan

योग - अभ्यास का एक प्राचीन रूप जो भारतीय समाज में हजारों साल पहले विकसित हुआ था और उसके बाद से लगातार इसका अभ्यास किया जा रहा है। इसमें किसी व्यक्ति को सेहतमंद रहने के लिए और

विभिन्न प्रकार के रोगों और अक्षमताओं से छुटकारा पाने के लिए विभिन्न प्रकार के व्यायाम शामिल हैं। यह ध्यान देने के लिए एक मजबूत विधि के रूप में भी माना जाता है जो मन और शरीर को आराम देने में मदद करता है।



Chakrasaan



padammayurasan

दुनियाभर में योग का अभ्यास किया जा रहा है। विश्व के लगभग 2 अरब लोग एक सर्वेक्षण के मुताबिक योग का अभ्यास करते हैं।

योग का शब्द का उद्भव संस्कृत के 'युज' धातु से हुआ है। जिसका अर्थ है, शारीरिक और मानसिक शक्तियों का संयोग। योग एक अभ्यास है जो मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक और सामाजिक स्वास्थ्यको बनाए रखता है। योग एक कला है जो हमारे शरीर, मन और आत्मा को एक साथ जोड़ता है। योग सभी मनुष्यों के जीवन में काफी महत्वपूर्ण है।

जब-जब ये बारिश आये

जब-जब ये बारिश आये,

सब कुछ खिल जाए |

जब-जब ये बारिश आये,

मेरा दिल खुशी से भर जाए |

जब-जब ये बारिश आये,

हर मन प्रसन्न हो जाए |

जब-जब ये बारिश आये,

हर दुःख दूर हो जाए |

जब-जब ये बारिश आये,

अपने साथ हरियाली लाए |

जब-जब ये बारिश आये,

आपने साथ खुशियाँ लाये



नाम - निशा राज

कक्षा- सातवी

"बेटियां"

बेटियों की लाज अब हमें बचानी है बेटियों की लाज अब हमें बचानी है बहुत हुआ अन्याय अब इसको सह नहीं पाएगी बहुत हुआ अन्याय अब इसको सह नहीं पाएगी बेटियों की लाज अब हमें बचानी है अपने घर के बेटों को अब यह सीखाना होगा की बेटियों का मान सम्मान कैसे करना है बेटियों के होने से ही बेटे हैं यदि कल ना होगी बेटियां तो बेटे कहां से आएंगे कल ना होगी बेटियां तो बेटे कहां से आएंगे एक कुल को रोशन करता है बेटा

दो कुल को रोशन करती है बेटियां यह सब उनको सीखाना होगा यह सब उनको बताना होगा

बेटी है तो कल है बेटियां देश का भविष्य है

बेटियों की लाज अब हमें बचानी होगी बेटियों की लाज अब हमें बचानी होगी



परी लखेरा

सातवी द



डॉ भीमराव अम्बेडकर का जीवन परिचय

बाबासाहब आम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को ब्रिटिश भारत में मध्य प्रदेश के महु नामक स्थान में हुआ था वर्तमान में यह डॉक्टर आम्बेडकर नगर मध्य प्रदेश में है। जन्म के समय इनका नाम भीवा ,भीम ,भीमराव था। इनके माता पिता इन्हें भीमा नाम से पुकारते थे।

भीमराव अम्बेडकर को बाबासाहब आम्बेडकर, भीमराव रामजी आम्बेडकर के नाम से भी जाना जाता है। वह भारतीय संविधान के जनक कहे जाते हैं इतना ही नहीं वह भारत गणराज्य के निर्माताओं में भी अपना स्थान रखते हैं।

Ambedkar स्वतंत्र भारत के पहले विधि एवं न्याय मंत्री (Law and Justice Minister) थे। वह एक महान वक्ता ,दार्शनिक ,नेता ,शिक्षक थे। उन्होंने अपने जीवनकाल में कई पुरस्कार अर्जित किये। वह भारत में अपनी जाति के पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने कॉलेज शिक्षा प्राप्त की थी।

इन्होंने धार्मिक ,शैक्षिक ,राजनीतिक संगठनों का निर्माण किया और समाज में अछूतों और गरीबों के उत्थान और उनको मौलिक अधिकार दिलाने के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। 1990 में आम्बेडकर जी को देश का सबसे बड़ा सम्मान भारत रत्न दिया गया।

नाम:अमित बैरागी

कक्षा:11th "A"

वे आँखे

जग की खूबसूरती दिखाती है आँखें
दिल से दिल मिलाती है वे आँखें
कभी दुश्मन बन मुस्कुराती है आँखें
कभी दिल की जुबां बन प्यार जताती है आँखें
गम और खुशी में आँसू बहाती है आँखे
अंधकार में सदा हमे बहाती है आँखें
ईश्वर का एहसास कराती है आँखें

- अनुष्का सेन
सातवीं स



हजरत टीपू सुल्तान का जीवन परिचय

इतिहास के पन्नों में टीपू सुल्तान के नाम पर भले ही विवाद चली आ रही है किन्तु टीपू सुल्तान का नाम मिटा पाना असम्भव है। 20 नवंबर 1750 में कर्नाटक के देवनाहल्ली में जन्मे टीपू का पूरा नाम सुल्तान फतेह अली खान शाहाब था।

उनके पिता का नाम हैदर अली और माँ का फकरुन्निसाँ था। उनके पिता मैसूर साम्राज्य के एक सैनिक थे लेकिन अपनी ताकत के बल पर वो 1761 में मैसूर के शासक बने।

टीपू सुल्तान ने काफी कम उम्र से अपने पिता से युद्ध एवं राजनीति सीखना आरम्भ कर दिया था। उन्होंने 15 साल की उम्र से अपने पिता के साथ जंग में हिस्सा हिस्सा लेने की शुरुआत कर दी थी। वह अपने पिता के सामान कूटनीतिज्ञ एवं दूरदर्शी था। प्रजा की तकलीफों का उसे हमेशा ध्यान रहता था। टीपू सुल्तान ने गद्दी पर बैठते ही मैसूर को मुस्लिम राज्य घोषित कर दिया। टीपू सुल्तान को 'मैसूर का शेर' भी कहा जाता है। इसके पीछे एक कहानी है कि वह अपने एक फ्रांसीसी दोस्त के साथ जंगल में शिकार करने गए थे। और तभी एक शेर ने उन पर हमला कर दिया। और उन्होंने जुगत लगाकर तेजी से कटार से शेर को मार दिया। टीपू अपने आस-पास की चीजों का इस्लामीकरण किया। टीपू सुल्तान जब 15 वर्ष के थे, तब उनके पास सिर्फ 2000 सैनिक थे। लेकिन अपने साहस और कूटनीति के बल पर उन्होंने मालाबार की बड़ी सेना को हरा दिया था।

टीपू सुल्तान एक मुस्लिम शासक होने के बावजूद उन्होंने कई मंदिरों में तोहफे पेश किये। श्रीरंगपट्टण के श्रीरंगम (रंगनाथ मंदिर) को टीपू ने सात चांदी के कप और एक रजत कपूर -ज्वालिक पेश किया। मेलकोट में सोने और चांदी के बर्तन हैं। जिनके शिलालेख बताते हैं, कि ये टीपू ने भेंट किये थे। इनमे से कई को सोने और चांदी की थाली पेश की। टीपू ने कलाले के लक्ष्मीकांत मंदिर को चार रजत कप भेंट-स्वरूप दिए थे। ननजदगुड के श्री कांतेश्वर मंदिर में टीपू का दिया हुआ एक रत्न जड़ित कप है। 1782 और 1799 के बीच, टीपू सुल्तान ने अपनी जागीर के मंदिरों को 34 दान के सनद जारी किये। ननजदगुड के ननजुदेश्वर मंदिर को टीपू ने एक हरा शिवलिंग भेंट किया।

उनकी वीरता से प्रभावित होकर उनके पिता हैदर अली ने ही उन्हें शेर-ए-मैसूर के खिताब से नवाजा था। अंग्रेजों से

मुकाबला करते हुए श्रीरंगपट्टनम की रक्षा करते हुए 4 मई 1799 को टीपू सुल्तान वीरगति को प्राप्त हो गए।

नाम:-मोहम्मद बिलाल

कक्षा:"11c"

शिवाजी महाराज जीवन परिचय

छत्रपति शिवाजी महाराज, जिन्हें शिवाजी भी कहा जाता है, का जन्म 19 फरवरी 1630 को हुआ था। उनका जन्म शिवनेरी में हुआ था, जो पूना के जुन्नर में एक पहाड़ी किला है, जिसे अब पुणे के नाम से जाना जाता है। छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म नौकरशाहों के परिवार में हुआ था। उनके पिता शाहजी भोंसले बीजापुर सल्तनत की सेना में एक महान मराठा सेनापति थे और उनकी माँ जीजाबाई धर्म की एक महान भक्त थीं। वह भारत के महान मराठा साम्राज्य के संस्थापक थे। वह 17 वीं सदी के सबसे बहादुर और अद्भुत शासकों में से एक थे।

छत्रपति शिवाजी महाराज का जीवन इतिहास

छत्रपति शिवाजी महाराज भारत के मराठा साम्राज्य के संस्थापक थे। राज्य की सुरक्षा पूरी तरह से धार्मिक सहिष्णुता और ब्राह्मणों, मराठों और प्रभुओं के कार्यात्मक एकीकरण पर आधारित थी। शिवाजी महाराज, जो प्रमुख कुलीनों के वंशज थे, बहुत बहादुर थे और उन्होंने भारत को मजबूत करने के लिए कई युद्ध लड़े। उस समय भारत मुस्लिम शासकों के अधीन था और विभाजित था। मुगल उत्तर भारत में थे और मुस्लिम सुल्तान बीजापुर के साथ-साथ भारत के दक्षिण में गोलकुंडा के भी थे। शिवाजी महाराज की पैतृक संपत्ति बीजापुर के सुल्तानों के क्षेत्र में दक्कन क्षेत्र में स्थित थी। उन्होंने इस क्षेत्र में मुस्लिम शासकों के दमन और सभी हिंदुओं के उत्पीड़न को पाया। वह हिंदुओं की विनाशकारी स्थिति से दुखी थे और 16 वर्ष की उम्र में उन्होंने खुद को हिंदुओं की स्वतंत्रता का कारण बनने के लिए मना लिया। यह एक ऐसा दृढ़ विश्वास था जिसने उन्हें जीवन भर कायम रखा।

नाम: केशव तिवारी

कक्षा: 11th "A"

कबीर

1.माया मरी न मन मरा, मर-मर गए शरीर।

आशा तृष्णा न मरी, कह गए दास कबीर।।

अर्थात – कबीर दास जी कहते हैं कि मायाधन और इंसान का मन कभी नहीं मरा, इंसान मरता है शरीर बदलता है लेकिन इंसान की इच्छा और ईर्ष्या कभी नहीं मारती।

2.बुरा जो देखन में चला, बुरा न मिलिया कोय जो मन।

देखा आपना, मुझ से बुरा न कोय ।।

अर्थ: कबीर दास जी कहते हैं कि जब मैं इस दुनिया में लोगों के अंदर बुराई ढूंढने निकला तो कहीं भी मुझे बुरा व्यक्ति नहीं मिला, फिर जब मैंने अपने अंदर टटोल कर देखा तो पाया कि मुझसे बुरा व्यक्ति इस जग में और कोई नहीं है। अर्थात, हमें दूसरों के अंदर बुराई ढूंढने से पहले खुद के अंदर झाक कर देखना चाहिए और तब हमें पता चलेगा कि हमसे ज्यादा बुरा व्यक्ति इस संसार में और कोई नहीं है।

3. बोली एक अनमोल है, जो कोई बोलै जानि,

हिये तराजू तौलि के, तब मुख बाहर आनि.।।

अर्थ : जिसे बोल का महत्व पता है वह बिना शब्दों को तोले नहीं बोलता . कहते हैं कि कमान से छुटा तीर और मुंह से निकले शब्द कभी वापस नहीं आते इसलिए इन्हें बिना सोचे-समझे इस्तेमाल नहीं करना चाहिए . जीवन में वक्त बीत जाता है पर शब्दों के बाण जीवन को रोक देते हैं . इसलिए वाणि में नियंत्रण और मिठास का होना जरूरी है .



नाम ऋषभ राठौर

कक्षा 11 C

छत्रपति शिवाजी महाराज जीवनी

नाम: शिवाजी भोंसले

जन्म तिथि: 19 फरवरी, 1630 या अप्रैल 1627 जन्मस्थान: शिवनेरी किला, पुणे जिला, महाराष्ट्र

पिता: शाहजी भोंसले

माता: जीजाबाई

शासनकाल: 1674-1680

जीवनसाथी: साईबाई, सोयाराबाई, पुतलाबाई, सकवरबाई, लक्ष्मीबाई, काशीबाई

बच्चे: संभाजी, राजाराम, सखुबाई निम्बालकर, रणुबाई जाधव, अंबिकाबाई महादिक, राजकुमारबाई शिर्के

धर्म: हिंदू धर्म

मृत्यु: 3 अप्रैल, 1680

शासक: रायगढ़ किला, महाराष्ट्र

उत्तराधिकारी: संभाजी भोंसले

शिवाजी महाराज योद्धा राजा थे और अपनी बहादुरी, रणनीति और प्रशासनिक कौशल के लिए प्रसिद्ध थे. उन्होंने हमेशा स्वराज्य और मराठा विरासत पर ध्यान केंद्रित किया था.

शिवाजी महाराज, शाहजी भोंसले और जीजा बाई के पुत्र थे. उन्हें पूना में उनकी माँ और काबिल ब्राहमण दादाजी कोंडा-देव की देखरेख में पाला गया जिन्होंने उन्हें एक विशेषज्ञ सैनिक और एक कुशल प्रशासक बनाया था.

शिवाजी महाराज, गुरु रामदास से धार्मिक रूप से प्रभावित थे, जिन्होंने उन्हें अपनी मातृभूमि पर गर्व करना सिखाया था.

17वीं शताब्दी की शुरुआत में नए योद्धा वर्ग मराठों का उदय हुआ, जब पूना जिले के भोंसले परिवार को सैन्य के साथ-साथ अहमदनगर साम्राज्य का राजनीतिक लाभ मिला था. भोंसले ने अपनी सेनाओं में बड़ी संख्या में मराठा सरदारों और सैनिकों की भर्ती की थी जिसके कारण उनकी सेना में बहुत अच्छे लड़ाके सैनिक हो गये थे.

शिवाजी के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएँ (IMPORTANT EVENTS IN SHIVAJI'S LIFE)

टोरणा की विजय (CONQUEST OF TORANA): यह मराठाओं के सरदार के रूप में शिवाजी द्वारा कब्जा किया गया पहला किला था. उन्होंने यह जीत महज 16 साल की उम्र में हासिल कर वीरता और दृढ़ संकल्प से अपने शासन की नींव रखी.

टोरणा की विजय ने शिवाजी को रायगढ़ और प्रतापगढ़ फतह करने के लिए प्रेरित किया और इन विजयों के कारण बीजापुर के सुल्तान को चिंता हो रही थी कि अगला नंबर उसके किले का हो सकता है और उसने शिवाजी के पिता शाहजी को जेल में डाल दिया

– Pushpraj Singh

11 “C”

सावन अब मधु-राग न गाओ

सावन अब मधु -राग न गाओ,

मेघ बने क्रांति का दूत,

छोड़ विरही यक्ष का संग,

बूँद न हो, कालकूट का घूँट

बरसे भू पर अंतरंग ।

सावन अब मधु-राग न गाओ!

गीत न गाए सरवर का चंचल मराल,

हो ऐसी वर्षा अग्नि की भू पर कराल,

पंकज-नर्गिस-चम्पा जाएं मुरझा

चले ऐसी वह्नि की झंझा ।सावन अब

मधु-राग न गाओ!

अबकी सावन हो हालाहल की
वृष्टि,झर जाए करुणा हो पावन

दृष्टि,

वीरों को क्षीर पिलाना खूब,

न जाना क्षणभर में ही ऊब ।

सावन अब मधु-राग न गाओ!

हे नीलकण्ठ! स्वीकारो प्रणाम ,

बरसे कृशानु नेत्रों से ललाम,

हो जाए धरणी पुण्य-पावन !

बरसो सावन! बरसो सावन !! सावन

अब मधु-राग न गाओ!!!



गजेंद्र आर्य

11-B

सुविचार

1. “शिक्षण एक बहुत ही महान पेशा है जो किसी व्यक्ति के चरित्र, क्षमता, और भविष्य को आकार देता है”।
2. “जीवन में सफलता का आनंद तभी आता है, जब वो सफलता कठिनाई से प्राप्त की जाती है”।
3. “ तुम सूरज की तरह चमकना चाहते हो तो पहले सूरज की तरह जलो”।
4. “सपने वो नहीं है जो आप नींद में देखे, सपने वो है जो आपको नींद ही नहीं आने दे”।
5. “सपने सच हों इससे पहले आपको सपने देखने होंगे”।
6. “ अच्छी पुस्तक हजार दोस्तों के बराबर होती है जबकि एक अच्छा दोस्त एक लाइब्रेरी के बराबर होता”।
7. “छात्रों को प्रश्न जरूर पूछना चाहिए. यह छात्र का सवीत्तम गुण है”।
8. “काला रंग भावनात्मक रूप से बुरा है लेकिन हर ब्लैकबोर्ड छात्रों के जीवन को उज्ज्वल बनाता है”।
9. “अपनी पहली जीत के बाद आराम मत करो क्योंकि यदि आप दूसरी बार असफल होते हैं, तो अधिक होंठ यह कहने के लिए इंतजार कर रहे होंगे कि आपकी पहली जीत सिर्फ भाग्य थी”।
10. “यदि आप असफल होते हैं, तो कभी हार न मानें क्योंकि असफल होने का अर्थ है ‘सीखने का पहला प्रयास’”
- ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

-चंचल छपरीबंद

योग



Shahid , class- 8th B



PASHCHIMUTTANASAN

योग किसी के भौतिक अस्तित्व और आध्यात्मिक विवेक के बीच सामंजस्य का अंतिम कार्य है। मन और शरीर के बीच पूर्ण समन्वय को योग के रूप में जाना जाता है। व्यायाम के भौतिक रूप से

अधिक, इसे एक आध्यात्मिक कार्य माना जाता है जो आपको स्वयं के बारे में जागरूक बनाता है। जब हमारा मन शांत होता है तो हम जो गहन आत्मनिरीक्षण करते हैं, वह हमें अपने भीतर से जुड़ा हुआ महसूस कराता है। योग ने प्राचीन भारत में प्रारंभिक सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान आकार लिया। मूल रूप से योग का अभ्यास करने वाले हिंदू पुजारियों द्वारा इसे विस्तार से प्रलेखित किए जाने के बाद यह लोकप्रिय हो गया। भारत में योग को व्यायाम के बजाय जीवन शैली के रूप में अपनाया गया है।



SALBHASAN

पश्चिमी देशों ने अनगिनत स्वास्थ्य लाभों के कारण योग को आसानी से अपनाया है। अकेले संयुक्त राज्य अमेरिका में हजारों योग विद्यालय हैं जो



VRISHCHIKASAN

योग की कला सिखाते हैं। जबकि योग का अभ्यास घर पर कोई भी कर सकता है, जटिल आसन के लिए कुछ अभ्यास की आवश्यकता होती है। योग में अध्यात्मवाद की गहरी जड़ें इसलिए हैं क्योंकि जब हमारे मन और शरीर पूर्ण सामंजस्य में होते हैं, तो हमें दिव्य शांति की अनुभूति होती है जिसे संस्कृत में 'मोक्ष' कहा जा सकता है। योग का उद्देश्य हमारे शरीर में मौजूद किसी भी नकारात्मक ऊर्जा को

खत्म करके हमें खुद से जोड़ना है। यह सलाह दी जाती है कि योग करते समय हमें जमीन पर बैठना चाहिए क्योंकि इससे नकारात्मक ऊर्जा जमीन पर स्थानांतरित हो जाएगी।

राह

एक राह तो पकड़ो मंजिल मिल जाएगी,
कुछ करके तो देखो सफलता मिल जाएगी
गम नहीं है कि कुछ कर न पाएंगे
शुरू करके तो देखो, सब कर पाएंगे
वक्त निकालना तो सीखो मेरे यार,
खुद चला आइया तुम्हारे पास
कोशिश ही तो करनी है,
मंजिल खुद चल आएगी तुम्हारे पास
खुद चल आएगी तुम्हारे पास

कीर्ति प्रजापति

IX

कितने सुंदर कितने प्यारे फूल
सब के मन को भाते फूल ,
अद्भुत छटा बिखेरते फूल
इंद्रधनुष के हरे रंग के फूल।
गजरा माला साज सजावट
कितने उपयोग में आते फूल,
महक मिठास चहूँ और फैलाते
अपना अस्तित्व बताते फूल।

शील हाडा
सातवीं द

The background features a large, soft pink cloud-like shape in the center. To the right and bottom-left, there are purple, watercolor-style shapes. A network of thin, hand-drawn orange lines crisscrosses the page, creating a geometric pattern.

English corner

Dear Rain

You fall on earth in thousands

Not in a flow ,but in drops

Make a rhythm , rhythm of feelings

You are full of romance,joy

And endless sadness.

Staying in each mind, person to person changing .

You are in shayari of shayar

Causing relative stuff in poems and songs.

Bring joy for kids, crop in farms.

You be in mind of teen while fall.

Some want to be in you,some just look at you.

Heavy head ,wanna fall like you

It comes to my mind, to escape in next

Thoughts of my heart are flowing text

Hell and heaven , both are here

Which one would fit , choose it dear



KAVYANSHI JAIN

12TH C

Make it green

LIVES ARE CRYING BECAUSE IT'S NOT CLEAN, EARTH IS DYING BECAUSE IT'S NOT GREEN...

EARTH IS OUR DEAR MOTHER, DON'T POLLUTE IT, SHE GIVES US FOOD AND SHELTER, JUST SALUTE IT

WITH GLOBAL WARMING, IT'S IN DANGER, LET'S SAVE IT BY BECOMING A STRONG RANGER...

WITH DYING TREES AND ANIMALS, IT'S IN SORROW, MAKE GREEN TODAY AND GREEN TOMORROW...

WITH MELTING SNOW, ONE DAY IT WILL SINK, HOW CAN WE SAVE IT, JUST THINK...

TREES ARE PRECIOUS, PRESERVE THEM, WATER IS A TREASURE, RESERVE IT...

GROW MORE TREES, MAKE MOTHER EARTH GREEN, REDUCE POLLUTION AND MAKE HER A QUEEN

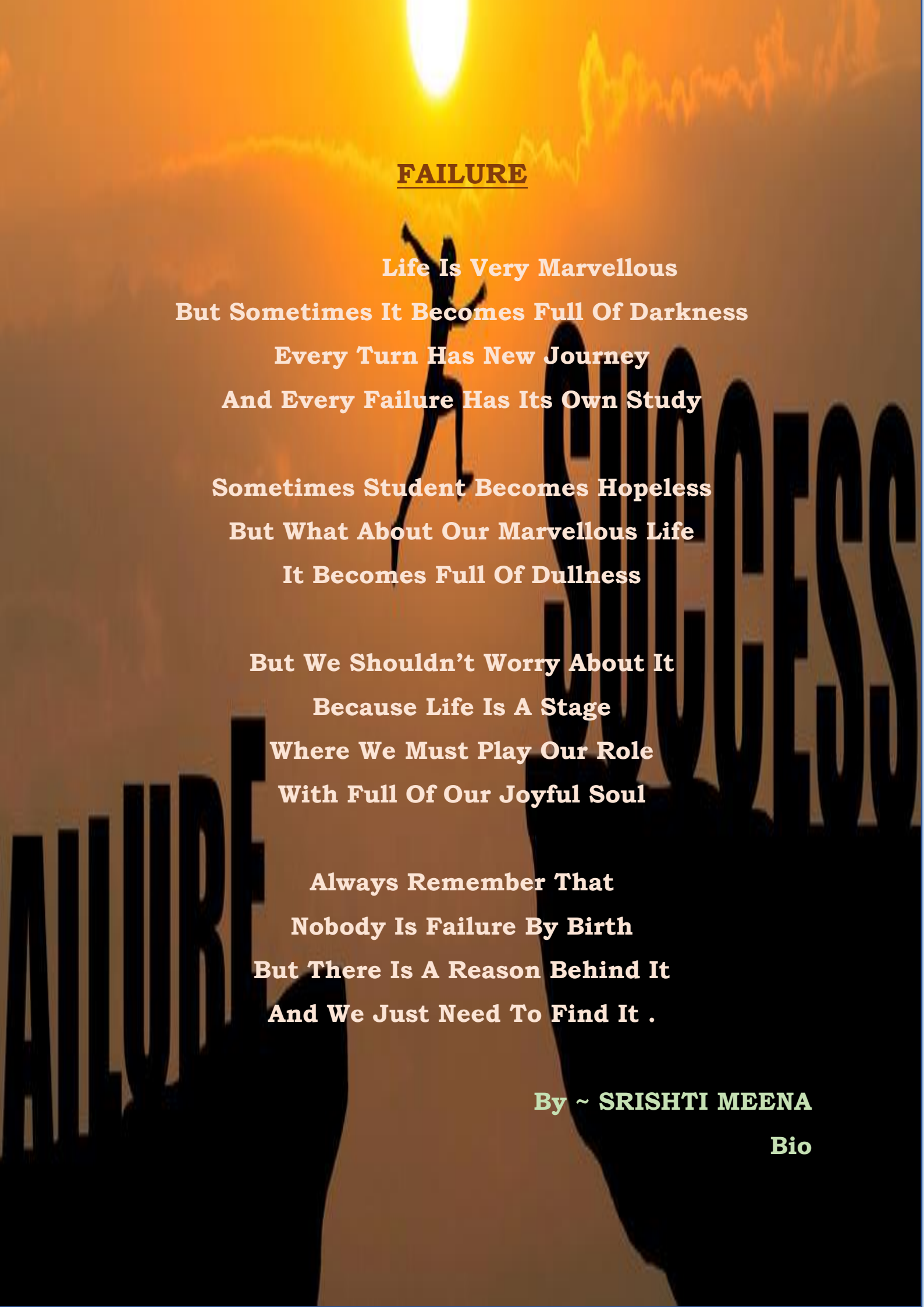
NAME- ADITI GUPTA

ROLL NO. - 02

CLASS - 11th "C"



FAILURE



**Life Is Very Marvellous
But Sometimes It Becomes Full Of Darkness
Every Turn Has New Journey
And Every Failure Has Its Own Study
Sometimes Student Becomes Hopeless
But What About Our Marvellous Life
It Becomes Full Of Dullness
But We Shouldn't Worry About It
Because Life Is A Stage
Where We Must Play Our Role
With Full Of Our Joyful Soul
Always Remember That
Nobody Is Failure By Birth
But There Is A Reason Behind It
And We Just Need To Find It .**

By ~ SRISHTI MEENA

Bio

Indian football player Sunil Chhetri:

Complete Name: Sunil Chhetri

Date of Birth: August 3, 1984 Spot of Birth: Secunderabad, Andhra Pradesh, India



Sunil Chhetri is a noticeable Indian footballer who is viewed as one of the best football players throughout the entire existence of Indian football. He has had an exceptional profession, accomplishing various honors and records all through his excursion.

Key Features of Sunil Chhetri's vocation starting around 2021

Club Vocation:

Sunil Chhetri has played for different clubs in India and abroad. He has been



related with clubs like Mohun Bagan, JCT, East Bengal, Donning Lisbon 'B' (Portugal), Kansas City Wizards (presently known as Wearing Kansas City), Chirag Joined together, and Bengaluru FC in the Indian Super Association (ISL).

Worldwide Vocation:



Chhetri is the commander of the Indian public football crew. He has addressed India in various worldwide competitions and is India's unsurpassed top scorer in global matches. Starting around 2021, he had outperformed the 70-objective imprint for the public group

Grants and Praises:

Sunil Chhetri has gotten a few honors and honors, including the esteemed

Arjuna Grant and Padma Shri, which are among the most elevated non military personnel respects in India. He has additionally been named AIFF (All India Football Organization) Player of the Year on various occasions.

Administration:

Chhetri's initiative here and there the field has been broadly recognized. He has been a vocal backer for Indian football and has effectively utilized web-based entertainment to advance the game and rouse youthful players.

Shivam Lodha



• **CHANDRAYAAN-3**

INSPIRATIONS

**“HOWEVER DIFFICULT WORK MAY SEEM,
THERE IS ALWAYS SOMETHING CAN DO
AND SUCCEED AT.”**

**NOTHING IS IMPOSSIBLE IN THE WORLD
AS THE WORD ITSELF SAY I'M POSSIBLE.**

**★ THE KEY TO SUCCESS IS TO FOCUS ON
GOALS, NOT OBSTACLES.**

Name-Abhijeet Singh

Class-7d

VIDEO EDITING

▪ INTRODUCTION TO VIDEO EDITING

Video editing is the process of selecting , rearranging ,and manipulating video clips to create a coherent of filmmaking, television production ,and content creation across various media platforms. Effective video editing can make the difference between a mediocre and a stunning final product.

▪ The IMPORTANCE OF VIDEO EDITING

Video editing plays a vital role in shaping the final presentation of visual content. Whether it's a Hollywood blockbuster , a documentary, a you tube vlog , or a corporate promotional video, video editing is the key to transforming raw footage into a polished, meaningful, and impactful piece of work. It enhance storytelling, engages the audience, and conveys a message effectively.`

▪ EVOLUTION OF VIDEO EDITING

The art and technology of video editing have come a long way since the early days of film and television production . In the past, video editing was a laborious and time-consuming process that involved physically cutting and splicing film reels. However, with advent of digital technology, video editing has become much more accessible, efficient, and creative.

▪ KEY ELEMENTS OF VIDEO EDITING

Effective video editing involves several key elements that contribute to the final productions quality:

1. **Cuts and transitions:** Deciding when and how to make cuts between shots and using transitions like fades, dissolves, and wipes to smoothly connect scenes.
2. **Audio editing :** Editing and mixing audio to ensure clear ,balanced sound, including dialogue, music, and sound effects.

3. **Visual effects:** Incorporating visual effects, such as compositing, motion graphics, and special effects, to enhance the visual storytelling.
4. **Color correction and Grading:** Adjusting the color and tone of the footage to create a consistent and appealing look.
5. **Pacing and rhythm:** Controlling the tempo and timing of the video to maintain the audience's interest and emotional engagement.

Storytelling: Structuring the video to convey a clear and compelling narrative, whether it's a fictional story, a documentary, or a marketing message.

❖ VIDEO EDITING PROCESS

Video editing involves tasks like cutting, trimming, merging, adding transitions, special effects, audio editing, and more to improve the quality and storytelling of a video.

❖ VIDEO EDITING SOFTWARE

There are various video editing software options available, ranging from basic to professional tools. Common examples include Adobe Premiere Pro, Final Cut, iMovie, and free software like Da Vinci Resolve and HitFilm Express.

❖ VIDEO EDITING TECHNIQUES

Editors use techniques like color correction, audio mixing, and visual and auditory aspects of a video.

❖ VIDEO EDITORS ROLE

A video editor is responsible for assembling raw video footage, selecting the best shots, and arranging them in a coherent, engaging manner. They often work closely with directors and producers to achieve the desired final product.

VIDEO EDITING CAREER

Video editing is viable career, and many professionals work in the film and video production industry. It's a creative field that requires both technical skill and an artistic eye.

VIDEO EDITING IN THE DIGITAL AGE

With the advancement of technology, video editing has become more accessible to the general public. Many people edit videos for personal use , such as vlogs or social media content.

GOVIND MEENA
12 C



The Giving Tree

Once upon a time, there was a beautiful tree in the forest. It was always happy and loved to provide shade and shelter for all the animals and the birds. One day, a little girl came to play under a tree. The tree was so happy and loved to have the girl around that it started giving her its apple to eat. As the girl grew older, she wants more and more from the tree. The tree gave the girl its branches to build a home, its trunk to build a boat. The tree was so happy to see the girl, but it was becoming weaker and weaker with each passing day. Finally, the girl grew old and came back to the tree. The tree had nothing left to give but its stem. The girl sat on the stem and realised how much the tree had given her she felt sad and regret for taking so much from the tree.

Moral of the Story- The girl learnt an important lesson. That love, kindness should be shared, not taken for granted.



Name- Aashi Shrivastava

Class- VI 'B'

Thankful To God

*Lord, in the morning I start each day,
By taking a moment to bow and pray.
Beginning with thanks, I then give praise
For all kind and loving ways.*

*today if sunshine turns to rain,
if a dark cloud brings some pain,
I won't doubt or hide in fear
for you, my god, are always near.*

*I will travel where you lead;
I will help my friends in need.
where you send me I will go;
with your help, I will learn and grow.*



name – Vedang khandelwal

class – 6th 'd'

HEALTH AND LIFESTYLES:

1. ACHIEVING BALANCE FOR OPTIMAL WELLNESS

A. The Importance of Health and Lifestyles

Maintaining good health is crucial for overall well-being. Our health not only affects our physical capabilities but also our mental and emotional states. When we lead a healthy lifestyle, we are better equipped to handle stress, have more energy, and experience greater happiness. Moreover, practicing healthy habits can prevent the onset of chronic diseases, boost our immune system, and improve our longevity.

B. Strategies for Balancing Health and Lifestyles

- 1. Prioritize Self-Care:** Make self-care a non-negotiable part of your routine. Set aside time each day to engage in activities that nourish your mind, body, and soul. Whether it's practicing mindfulness, going for a walk, or indulging in a hobby, find activities that bring you joy and help you recharge.
- 2. Nurture Healthy Relationships:** Having a strong support system is vital for our overall well-being. Surround yourself with positive and supportive individuals who inspire and motivate you to lead a healthy lifestyle. Engage in meaningful connections and foster relationships that enrich your life.
- 3. Maintain a Balanced Diet:** What we eat has a significant impact on our health. Ensure your diet is well-rounded and includes a variety of fruits, vegetables, lean proteins, and whole grains. Avoid excessive consumption of processed foods, sugary snacks, and beverages. Hydrate adequately by drinking plenty of water throughout the day.
- 4. Stay Active:** Regular physical activity is essential for maintaining good health. Incorporate exercise into your daily routine, whether it's through cardiovascular activities, strength training, or yoga. Find activities that you

enjoy and can sustain in the long run, making it easier to stay consistent and reap the benefits.

C. Frequently Asked Questions

Q: What are the benefits of a balanced lifestyle?

A: A balanced lifestyle promotes optimal wellness by improving physical health, boosting mental well-being, increasing energy levels, and reducing the risk of chronic diseases. It also enables better stress management and enhances overall happiness.

Q: How can I incorporate exercise into my busy schedule?

A: Look for opportunities to be active throughout the day. Take short walks during breaks, use stairs instead of elevators, or squeeze in quick home workouts. Prioritizing physical activity and setting realistic goals will help you make consistent progress.

Q: Can a healthy lifestyle improve mental health?

A: Absolutely! Engaging in regular exercise, maintaining a balanced diet, practicing mindfulness, and having a strong support system all contribute to improved mental health. These habits enhance mood, reduce stress, and promote greater emotional well-being.



Riya Dhanagar

12th C

BOOK REVIEW

TITLE : WINGS OF FIRE

AUTHOR : DR. A P J ABDUL KALAM GENRE : AUTOBIOGRAPHY

PUBLISHER : UNIVERSITIES PRESS

DR A P J Abdul kalam is a renowned India scientist who went on to 11th president of India & (2002 -2007) . He is very known across India & he is recipient of India ' s three highest civilians awards - Padma Bhushan Padma Vibhushan , Bharat Ratna . Wings of Fire is an autobiography of Dr AP J Abdul kalam before he became president of India . The story is all about a warm and intensely personally ,deeply passionate, common boat owner's son who has become India's most distinguished living technocrat. The pure faith in god and deep kindness, dealing life with positivity, science & technological advancements love towards one country and many more things are mentioned in this book. The theme of the book is it based on the travelling of a person from a middle class boy to missile man of India & president of India its also the story of struggle with life ,story of faith ,story of different religion live happily in India .

Abdul kalam is the main character of the book. It covers early life of Abdul kalam and his in Indian space research and missile programmes. The author by narrating his life journey evokes the reader to identify with one's inner fire and potential ,for he was of the firm belief that each one of us was born with strength and potential to make a tangible change in the world. How he inspired himself to achieve his dream and how he went about accomplished so much is what the book captures nicely. The book recollects many anecdotes and stories from childhood, his time at school and college, He wrote the time spent at the Langley Research centre ,NASA and Wallops flight facility gets a lot of attention. It tells lot of behind scenes information and technical details about India's Satellite and missile (SLV-3 Prithvi, Agni, Thirusul, Akash and Nag). Book contains many of his poems. The second half of the book deals with the author , the scientist who made a significant contribution in developing the country 's guided missile programme a pioneering effort for the security of the nation. It's not with reason that he was nick named the " Missile man of India" .

NAME : URVASHI SONP

CLASS : 12TH C





School Life: A Journey of Growth and Learning

School life is a unique and transformative journey that shapes individuals into who they are today. It is a period filled with countless experiences, challenges, and growth opportunities. From the first day of kindergarten to the final moments of high school, every step taken in the realm of education plays a crucial role in shaping a person's character, knowledge, and future. In this article, we will explore the significance of school life and how it molds individuals into well-rounded, knowledgeable, and confident individuals.

School Life: A Time of Discovery

Embracing New Beginnings

A student's journey in school begins with their first day at kindergarten. This crucial phase marks the beginning of a rollercoaster ride full of new experiences, challenges, and friendships. From forming relationships with teachers and classmates to learning the alphabet and basic arithmetic, every moment contributes to their growth. The first day sets the tone for the years to come, where students learn valuable skills such as communication, problem-solving, and cooperation.

Navigating the Social Landscape

School life offers a unique opportunity for students to build social skills and learn the art of mingling and interacting with others. Through group projects, extracurricular activities, and everyday interactions, students learn to collaborate, empathize, and appreciate diverse perspectives. These social skills are essential not only for their academic journey but also for their future personal and professional lives.

School Life: A Treasure Trove of Knowledge

Expanding Horizons

School life is an enriching experience that opens the doors to a world of knowledge and possibilities. From science and literature to history and mathematics, students have the privilege of delving into various subjects and expanding their intellectual horizons. Each subject offers unique insights and ways of thinking, fostering critical thinking and problem-solving skills that will benefit students long after they leave the classroom.

Unleashing Creativity

Education is not just about acquiring knowledge; it is also about nurturing creativity and self-expression. Students are encouraged to explore their artistic and creative abilities through subjects such as art, music, and drama. These creative outlets allow students to develop their imagination, gain confidence, and express themselves in ways they may not have thought possible.

School Life: A Launchpad for Future Success

Building a Strong Foundation

School life lays the foundation for future academic and professional endeavors. Through rigorous academic coursework, students develop discipline, perseverance, and the ability to set and achieve goals. The challenges faced during school life, such as exams and projects, teach students the importance of hard work and dedication, preparing them for the realities of the professional world.

Nurturing Life Skills

Beyond academics, school life equips students with essential life skills that are crucial for personal and professional success. From time management and organizational skills to problem-solving and teamwork, these skills are honed through extracurricular activities, sports, and various leadership opportunities. Such experiences instill qualities like leadership, resilience, and adaptability, making students well-rounded individuals ready to tackle any challenge that comes their way.

Conclusion

School life is a transformative journey filled with invaluable experiences, knowledge, and personal growth. It molds individuals into confident, knowledgeable, and well-rounded individuals who are ready to take on the world. From embracing new beginnings and navigating the social landscape to expanding horizons and building a strong foundation, school life prepares students for a bright and successful future. So cherish every moment, embrace every challenge, and make the most of this incredible journey called school life.

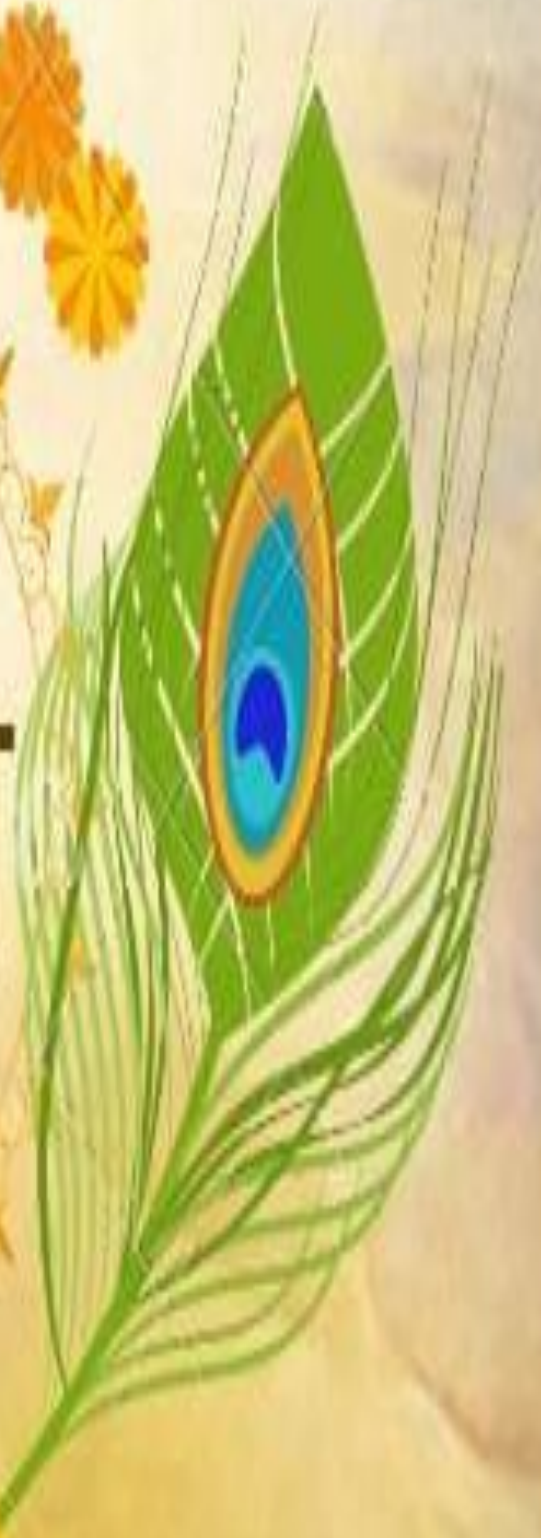
SEO meta-description: Discover the significance of school life and how it shapes individuals into confident, knowledgeable, and well-rounded individuals. Explore the transformative journey of education.



Name :- Apeksha Kalyani

Class : - 12th commerce

संस्कृत



विद्या (सरस्वती) ।

विद्यायाः विचित्र महिमा वर्तते विद्याधनं सर्वधनं
प्रधानम् अस्ति । इदं व्यय कृतं अपि क्षीणं न जायते ।
व्यये कृते विद्यायाः वृद्धिः एवं भवति । विद्वांसः
अपूर्वः सुखं लभन्ते । विद्या विनयं ददाति । विनयात्
जनः पात्रतां ततश्च धनं धर्ममपि च प्राप्नोति । विदुषः
तु परदेशेषु अपि सम्मानं भवति । विद्याहीनः नरः
पशुतुल्य भवति । अतः आत्महिताय नरैः विद्याभ्यासः
करणीयः ।

सृष्टि मीना

ग्यारहवीं ब

! सुभाषितानि !

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्न सुभाषितम्।

मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते॥1॥

सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः।

सत्येन वाति वायुश्च सर्व सत्ये प्रतिष्ठितम्॥2॥

दाने तपसि शौर्ये च विज्ञाने विनये नये।

विस्मयो न हि कर्तव्यो बहुरत्ना वसुन्धरा॥3॥

सद्धिरेव सहासीत सद्धिः कुर्वीत सङ्गतिम्।

सद्भिर्विवादं मैत्रीं च नासद्भिः किञ्चिदाचरेत्॥4॥

धनधान्यप्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च।

आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्॥5॥

क्षमावशीकृतिलोके क्षमया किन् न साध्यते।

शान्तिखड्गः करे यस्य किम् करिष्यति दुर्जनः॥6॥

नाम -डिम्पल

कक्षा -8 -'ब'



सुभाषितानि

वाणी रसवती यस्य , यस्य श्रमवती क्रिया ।
लक्ष्मी दानवती :यस्य , सफलं तस्य जीवितम् ॥

सन्तोषः परमो लाभः , सत्संगः परमा गतिः ।
विचारः परमं ज्ञानं , शमो हि परम सुखम् ॥

गते शोको न कर्तव्यो , भविष्यं नैव चिंतयेत् ।
वर्तमानेन कालेन , वर्तयन्ति विचक्षणाः ॥

नमन्ति फलिनो वृक्षाः , नमन्ति गुणिनो जनाः ।
शुष्ककाष्ठश्च मूर्खश्च , न नमन्ति कदाचन ॥

काकचेष्टा बकोध्यानं , स्वान निद्रा तथैव च ।
अल्पहारी गृहत्यागी , विद्यार्थी पंचलक्षणम् ॥



ऐंजल कणिक

सप्तमी - [ब]

मूर्खजनैः सह मित्रता न उचिता [कथा]

पुरा एकस्य नृपस्य एकः प्रियः वानरः आसीत्। एकदा नृपः सुप्तः आसीत्। वानरः व्यजनेन तम् अवीजयत्। तदैव एका मक्षिका नृपस्य नासिकायाम् उपविशत्। यद्यपि वानरः वारंवारम् व्यजनेन तां निवारयति स्म तथापि सा पुनः पुनः नृपस्य नासिकायामेव उपविशति स्म। अन्ते सः मक्षिकां हन्तुं खड्गेन प्रहारम् अकरोत्। मक्षिका तु उड्डीय दूरम् गता, किन्तु खड्गप्रहारेण नृपस्य नासिका छिन्ना अभवत्। अतः एवोच्यते - "मूर्ख जनैः सह मित्रता न

उचिता।



साक्षी कुमारी

कक्षा - सप्तमी [ब]

सुवचनानि

1. उद्यमेन हि सिध्यन्ति , कार्याणि न मनोरथैः।

न हि सुप्तस्य सिंहस्य , प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥

अर्थात् - : उद्यम, यानि मेहनत से ही कार्य पूरे होते हैं, सिर्फ इच्छा करने से नहीं। जैसे सोये हुए शेर के मुँह में हिरण स्वयं प्रवेश नहीं करता बल्कि शेर को स्वयं ही प्रयास करना पड़ता है।

2. वाणी रसवती यस्य, यस्य श्रमवती क्रिया ।

लक्ष्मी :दानवती यस्य, सफलं तस्य जीवितं ॥

अर्थात् - : जिस मनुष्य की वाणी मीठी है, जिसका कार्य परिश्रम से युक्त है, जिसका धन दान करने में प्रयुक्त होता है, उसका जीवन सफल है।

3. यथा चित्तं तथा वाचो , यथा वाचस्तथा क्रियाः।

चित्तेवाचि क्रियायां च , साधुनामेकरूपता ॥

अर्थात् - : अच्छे लोग वही बात बोलते हैं जो उनके मन में होती है .अच्छे लोग जो बोलते हैं वही करते हैं .ऐसे पुरुषो के मन, वचन व कर्म में समानता होती है.

4. प्रियवाक्यप्रदानेन , सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः ।

तस्मात् तदैव वक्तव्यं , वचने का दरिद्रता ॥

अर्थात् - : प्रिय वाक्य बोलने से सभी जीव संतुष्ट हो जाते हैं, अतः प्रिय वचन ही बोलने चाहिए। ऐसे वचन बोलने में कंजूसी कैसी।

5 काक चेष्टा, बको ध्यानं, स्वान निद्रा तथैव च ।

अल्पहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणं ॥

अर्थात् - : एक विद्यार्थी में यह पांच लक्षण होने चाहिए- कौवे की तरह जानने की चेष्टा, बगुले की तरह ध्यान, कुत्ते की तरह सोना, आवश्यकतानुसार खाना और घर का त्याग करना



समर शर्मा

कक्षा - सप्तमी ब

संस्कृतप्रहेलिका:

वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजः , तृणं च शय्या न च राजयोगी ।

सुवर्णकायो न च हेमधातुः , पुंसश्चनाम्ना न च राजपुत्रः ॥ [आम्र]

वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजः , त्रिणेत्रधारी न च शूलपाणिः ॥

त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी , जलं च बिभ्रन् न घटो न मेघः ॥ [नारियल]

अस्ती कुक्षी शिरो नास्ती , बाहुरस्ती निरंगुली ॥

अहतो नरभक्षीचा , योजानाती सःपंडितः ॥ [कमीज]

कृष्णमुखी न मार्जारी , द्विजिह्वा न च सर्पिणी ।

पञ्चभर्ता न पाञ्चाली , यो जानाति सः पण्डितः ॥ [लेखनी]

न तस्यादिः न तस्यान्तः , मध्ये यः तस्य तिष्ठति ।

तवाप्यस्ति ममाप्यस्ति , यदिजानासि तद्वद ॥ [नयन]



खुशी फरक्या

अष्टमी अ

सुभाषित श्लोकानि वेदवाक्यानि च

प्रथमेनार्जिता विद्या , द्वितीयेनार्जितं धनं ।

तृतीयेनार्जितः कीर्तिः , चतुर्थे किं करिष्यति ॥

अर्थ :जिसने प्रथम अर्थात् ब्रह्मचर्य आश्रम में विद्या अर्जित नहीं की, द्वितीय अर्थात् गृहस्थ आश्रम में धन अर्जित नहीं किया, तृतीय अर्थात् वानप्रस्थ आश्रम में कीर्ति अर्जित नहीं की, वह चतुर्थ अर्थात् संन्यास आश्रम में क्या करेगा?

विद्या मित्रं प्रवासेषु , भार्या मित्रं गृहेषु च ।

रुग्णस्य चौषधं मित्रं , धर्मो मित्रं मृतस्य च ॥

अर्थात् :प्रवास की मित्र विद्या, घर की मित्र पत्नी, मरीजों की मित्र औषधि और मृत्योपरांत मित्र धर्म ही होता है।

ॐ असतो मा सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय । मृत्योर्मा मृतं गमय ॥

अर्थात् :हे ईश्वर) हमको (असत्य से सत्य की ओर ले चलो। अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहे। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहे।।

अर्थात् :परमेश्वर हम शिष्य और आचार्य दोनों की साथ-साथ रक्षा करें, हम दोनों को साथ-साथ विद्या के फल का भोग कराए, हम दोनों एकसाथ मिलकर विद्या प्राप्ति का सामर्थ्य प्राप्त करें, हम दोनों का पढ़ा हुआ तेजस्वी हो, हम दोनों परस्पर द्वेष न करें। उक्त तरह की भावना रखने वाले का मन निर्मल रहता है। निर्मल मन से निर्मल भविष्य का उदय होता है।

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् , मा स्वसारमुत् स्वसा ।

सम्यञ्च :सव्रता भूत्वा , वाचं वदत भद्रया ॥

अर्थात :भाई, भाई से द्वेष न करें, बहन, बहन से द्वेष न करें, समान गति से एक-दूसरे का आदर-सम्मान करते हुए परस्पर मिल-जुलकर कर्मों को करने वाले होकर अथवा एकमत से प्रत्येक कार्य करने वाले होकर भद्रभाव से परिपूर्ण होकर संभाषण करें। उक्त तरह की भावना रखने से कभी गृहकलह नहीं होता और संयुक्त परिवार में रहकर व्यक्ति शांतिमय जीवन जी कर सर्वांगिण उन्नति करता रहता।

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ॥

अर्थ :शरीर ही सभी धर्मों) कर्तव्यों (को पूरा करने का साधन है। अर्थात : शरीर को सेहतमंद बनाए रखना जरूरी है। इसी के होने से सभी का होना है अतः शरीर की रक्षा और उसे निरोगी रखना मनुष्य का सर्वप्रथम कर्तव्य है। पहला सुख निरोगी काया ।



स्वास्तिका यादव

कक्षा- अष्टमी अ

लोकहितं मम करणीयम् (गीतम्)

मनसा सततं स्मरणीयम्

वचसा सततं वदनीयम्

लोकहितं मम करणीयम् ॥

न भोगभवने रमणीयम्

न च सुखशयने शयनीयम्

अहर्निशं जागरणीयम्

लोकहितं मम करणीयम् ॥ ॥ मनसा ॥

न जातु दुःखं गणनीयम्

न च निजसौख्यं मननीयम्

कार्यक्षेत्रे त्वरणीयम्

लोकहितं मम करणीयम् ॥ ॥ मनसा ॥

दुःखसागरे तरणीयम्

कष्टपर्वते चरणीयम्

विपत्तिविपिने भ्रमणीयम्

लोकहितं मम करणीयम् ॥ ॥ मनसा ॥

गहनारण्ये घनान्धकारे

बन्धुजना ये स्थिता गहरे

तत्र मया सञ्चरणीयम् मृदुल भील लोकहितं मम करणीयम् ॥

मृदुल भील

अ ७



कस्य किम् आभूषणम्

| | | |
|--------------------|---|-----------------|
| छात्राणाम् आभूषणम् | - | विद्याध्ययनम् |
| सज्जनानाम् आभूषणम् | - | परोपकारः |
| तपस्विनः आभूषणम् | - | इन्द्रियनिग्रहः |
| सैनिकस्य आभूषणम् | - | शौर्यम् |
| मुखस्य आभूषणम् | - | मधुरवाणी |
| हस्तस्य आभूषणम् | - | दानम् |
| कर्णस्य आभूषणम् | - | श्रुतिश्रवणम् |
| देशस्य आभूषणम् | - | राष्ट्रएकता |
| राजः आभूषणम् | - | प्रजापालनम् |
| सेवकस्य आभूषणम् | - | आज्ञापालनम् |
| नागरिकस्य आभूषणम् | - | देशप्रेम- |



नव्या

7 अ

विद्यां ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम् ।

पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम् ॥

विद्या यानी ज्ञान हमें विनम्रता प्रदान करता है विनम्रता से योग्यता से आती है और योग्यता हमें धन प्राप्त होता है जिससे हम धर्म के कार्य करते हैं और हमें सुख मिलता है

अलसस्य कुतो विद्या ,अविद्यस्य कुतो धनम्।

अधनस्य कुतो मित्रम् ,अमित्रस्य कुतः सुखम्॥

आलसी को विद्या कहां अनपढ़ को धन कहां निर्धन को मित्र कहां और अमित्र को सुख कहां।

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।

तस्मात् प्रियं हि वक्तव्यं,वचने का दरिद्रता॥

प्रिय वाक्य बोलने से सभी जीव संतुष्ट हो जाते हैं अतः प्रिय वचन ही बोलना चाहिए ऐसे वचन बोलने में कंजूसी कैसी ?

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।

न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥

कोई भी काम कड़ी मेहनत से ही पूरा होता है सिर्फ सोचने भर से नहीं । कभी भी सोते हुए शेर के मुंह में हिरण खुद नहीं आ जाता।

नास्ति विद्या समं चक्षु नास्ति सत्य समं तपः।

नास्ति राग समं दुखं नास्ति त्याग समं सुखं ॥

विद्या के समान आंख नहीं है सत्य के समान तपस्या नहीं है आसक्ति के समान दुःख नहीं है और त्याग के समान सुख नहीं है ॥



शिवम पटेल

कक्षा - 8 स

लालनगीतम्

उदिये सूर्ये धरणी विहसति ।

पक्षी कूजति कमलं विकसति ।1।

नदति मन्दिरे उच्चैःढक्का ।

सरितःसलिले सेलति नौका ।।2।।

पुष्पे पुष्पे नानारंगाः।

तेषु डयन्ते चित्रप पतंगाः ।।3।।

वृक्षे वृक्षे नूतनपत्रम् ।

विविधैः वर्णैः विभाति

चित्रम्।।4।।



नाम-अनुष्का सेन

कक्षा-7

ॐ सहनाववतु सहनौ भुनक्तु ।

सहवीर्यं करवावहै ।

तेजस्विनावाधीतमस्तु

मा विद्विषावहै ॥

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

अर्थ

ईश्वर हम दोनों)गुरु एवं शिष्य (की रक्षा करें !हम दोनों का पोषण करें ! हम दोनों पूर्ण शक्ति के साथ कार्यरत रहे ! हम तेजस्वी विद्या को प्राप्त करें ! हम कभी आपस में द्वेष ना करें ! सर्वत्र शांति रहे!

नाम -प्रियंका गौतम

कक्षा अष्टमी स

धन्यं भारतवर्षम्*

धन्यं भारतवर्षं धन्यम् ।

पुण्यं भारतवर्षं पुण्यम् ॥

यस्य संस्कृतिः तोषदायिनी,

पापनाशिनी पुण्यवाहिनी।

यत्र पुण्यदा गङ्गा याति,

सिन्धु-नर्मदा सदा विभाति।

सरस्वती च धन्या-धन्या,

यमुना कृष्णा मान्या मान्या।

शृणुमो यत्र च वेदं पुण्यम् ॥

धन्यं भारतवर्षं धन्यम्,

पुण्यं भारतवर्षं पुण्यम् ॥

यत्र पर्वताः रम्याः रम्याः,

ऋषयो मुनयो धन्याः धन्याः।

कैलासश्च हिमराजश्च,

विन्ध्य-सतपुड़ा-हिमाद्रिश्च।

अरावली पर्वतमाला च,

स्वर्ण-सुमेरु-हर्षकरश्च।

पुण्य-पर्वतैः पुण्यं पुण्यम्॥

धन्यं भारतवर्षं धन्यम्,

पुण्यं भारतवर्षं पुण्यम् ॥



Name - Ayush Singh

Class - 8th D



ART
GALLERY



HIMANSHU YADAV

12 B



GOURANG

6 B



VEDIKA PANDIT

9A



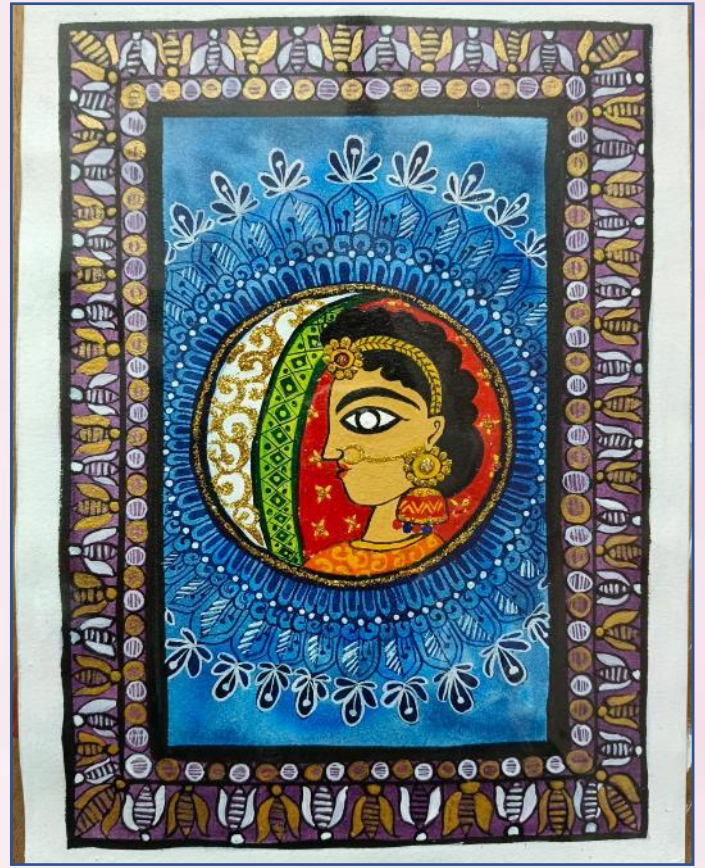
DISHI PADIYAR

9D



HEMNANDINI

9 C



HIMANSHU YADAV

12 B



HIMANSHU YADAV

12 B



SOUMAYA SHARMA

6 B



PRIYANSHI MALVIYA

9D



ADIBA

6A



RUPALI PANDIT

9A



AZLEENA MANURI

11 D



यादों के झरोखे

सेवानिवृत्ति कार्यक्रम



योग दिवस



स्वतंत्रता दिवस



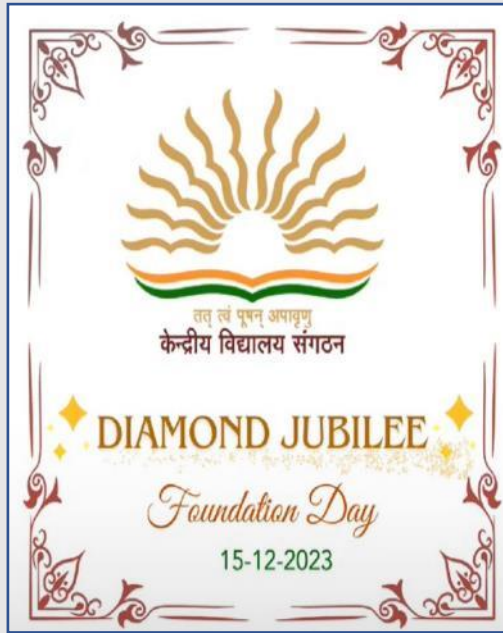




Our champions



स्थापना दिवस



चित्रकला प्रतियोगिता



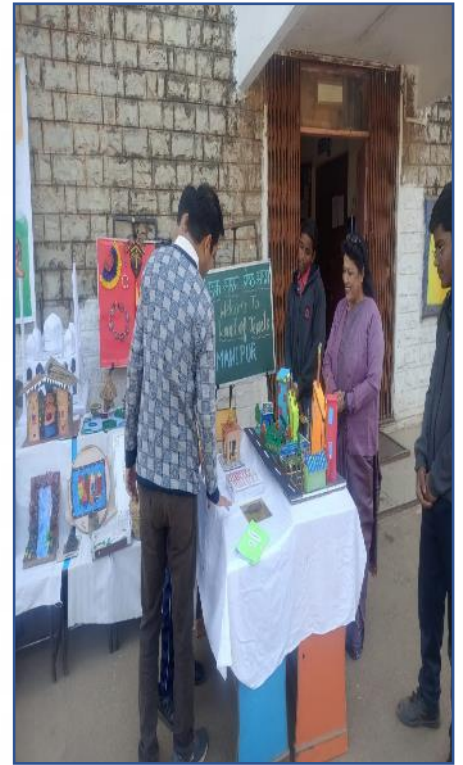
अन्य गतिविधियाँ



खेल दिवस



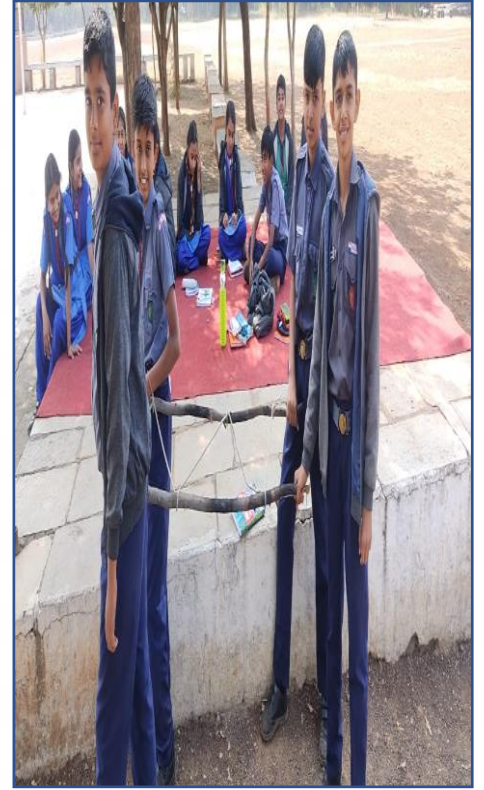
विज्ञान ,साहित्य तथा कला प्रदर्शनिया



वृक्षारोपण



स्काउट गाइड गतिविधियाँ



रंगोली प्रतियोगिता.



स्वच्छता पखवाड़ा





पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1 नीमच



विद्यालय एक दृष्टि में

- स्थापना वर्ष 1970
- कक्षा बालवाटिका 3, से 12 तक प्रत्येक में 4 सेक्शन
- कक्षा 11 एवं 12 में विज्ञान, वाणिज्य एवं कला संकाय
- कक्षा 3 से कम्प्यूटर एवं योग शिक्षा
- कला शिक्षा, शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा, कार्यानुभव
- विशेष आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के लिए विशेष शिक्षक, डॉक्टर एवं नर्स
- नियमित सह शैक्षिक गतिविधियां
- प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यार्थी परिषद
- सम्पूर्ण विद्यालय परिसर वाईफाई सुविधायुक्त, सीसीटीवी निगरानी में
- भौतिक विज्ञान / रसायन विज्ञान / जीव विज्ञान/गणित/कनिष्ठ विज्ञान प्रयोगशालाएँ
- प्राथमिक, कनिष्ठ एवं वरिष्ठ कम्प्यूटर प्रयोगशालाएँ

30 कम्प्यूटर युक्त भाषा प्रयोगशाला

नियमित चिकित्सा परीक्षण

समृद्ध पुस्तकालय एवं पुस्तकालय ब्लॉग

•ओपन जिम एवं ध्यान योग केन्द्र

स्मार्ट क्लासेस

स्मार्ट टीवी एवं प्रॉजेक्टर युक्त गतिविधि कक्ष

• प्राथमिक विभाग में प्रत्येक शनिवार को फन डे, खेल-खेल में शिक्ष

झूलों सहित चिल्ड्रन पार्क

• बास्केटबाल कोर्ट

• आउटडोर गेम्स वॉलीबॉल, फुटबॉल, हैंडबाल, खो-खो,

कबड्डी इत्यादि खेलने की सुविधा

इंडोर गेम्स शतरंज, टेबिल टेनिस इत्यादि खेलने की सुविधा

वॉटर कूलर तथा आर ओ फ़िल्टर वॉटर पॉइंट्स

विद्यालय की स्वयं की वैबसाइट

KV CODE :-1127

CBSE SCHOOL CODE :- 54111

CBSE AFFILIATION NO :- 1000009

UDISE CODE: 23180720605

EMAILS

kvmnh@rediffmail.com

ppl.neemuchcrpf@kvs.gov.in

WEBSITE



<https://crpfneemuch.kvs.ac.in>



07423-220233



PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA NO.1 NEEMUCH (@kv1crpfneemuch)



<https://www.facebook.com/crpfneemuch>





धन्यवाद